वेदोऽखिलो धर्ममूलम्

वेद प्रकाश

जीवन से जीवन

अग्निनाग्निः समिध्यते ॥ (साम० ८४४)

(अग्निना) अग्नि से (अग्निः) अग्नि (सम्+इध्यते) जलती है ।

वेद-माता इस सूक्ति में एक सुन्दर उपदेश दे रही है । अग्नि से अग्नि जलती है । जीवन से जीवन प्रकाशित होता है । प्रीति से प्रीति बढ़ती है और वैर से वैर बढ़ता है ।

यदि आप दूसरों का निर्माण करना चाहते हैं तो पहले अपने जीवन में क्रान्ति उत्पन्न करनी होगी, अपने को चुम्बक बनाना होगा, अपने जीवन में विशेषता उत्पन्न करनी होगी, फिर दूसरों का सुधार और उद्धार हो सकेगा । एक जलता हुआ दीपक लाखों बुझे हुए दीपकों को जला सकता है, परन्तु लाखों बुझे हुए दीपक एक दीपक को नहीं जला सकते । एक महापुरुष, जिसमें जीवन-ज्योति है, लाखों को जीवन-ज्योति प्रदान कर सकता है, उन्हें सन्मार्ग पर ला सकता है ।

When a flower opens, bees come to it uninvited.

महर्षि दयानन्द का जीवन-सुमन विकसित हुआ तो उस पर महात्मा मुंशीराम, गुरुदत्त विद्यार्थी, आर्य मुसाफिर पं० लेखराम, महात्मा हंसराज, लाला लाजपतराय आदि मधु-मक्खियां मंडराने लगीं ।

इसीलिए पहले स्वयं तेजस्वी, वर्चस्वी, सदाचारी व शुद्ध-पवित्र बनो, फिर दूसरों को बनाओ ।

—'स्वर्ण पथ' से

बोध-कथा

प्रश्नोत्तर : पिता-पुत्र के

व्यास जी के पुत्र शुकदेव जी बाल्यावस्था से ही सांसारिक सुख-सुविधाओं से विरक्त थे। गृहस्थ का मोह छोड़कर बालक शुकदेव वनवास के लिए जब जाने लगे तब उनके पिता व्यास जी ने बड़े आग्रह से पुत्र को रोका और अनुरोध किया "बेटे, तुम कुछ समय प्रतीक्षा करो, इस बीच मैं तुम्हारे कुछ संस्कार कर दूंगा।" प्रत्युत्पन्न बालक शुकदेव ने कहा—"पिता जी, अब तक पता नहीं मेरे कितने जन्म हो चुके हैं, उन जन्मों में मेरे अनेक संस्कार हो चुके हैं। ये संस्कार ही तो मुझे भव-बन्धनों में डाले हुए हैं, अब मैं जन्मों के इस चक्र से बचना चाहता हूं।"

पितृश्री व्यास जी ने समझाते हुए कहा—"तुम सच्चा मोक्ष चाहते हो तो तुम्हें ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास आश्रमों के सभी दायित्वों को भली प्रकार निबाहना होगा।" शुकदेव ने कहा—"पिता जी, बुरा न मानें अगर ब्रह्मचर्य से मोक्ष मिलता तो सबसे पहले तो नपुंसकों को मिलता, फिर यदि गृहस्थ से ही मुक्ति मिले तो सारा संसार ही मुक्त हो जाना चाहिए। अगर वानप्रस्थी मोक्ष के अधिकारी हैं तो वनों में रहने वाले सभी पशु-पक्षी मुक्ति पा जायें, फिर यदि संन्यास से मुक्ति सम्भव है तो सभी दरिद्रों और अभावग्रस्तों को वह मिल जाती।"

व्यास जी ने मनुहार करते हुए कहा—"पर पुत्र, अच्छे गृहस्थियों के लिए लोक-परलोक दोनों सुखद होते हैं। गृहस्थ की संग्रहवृत्ति सब को सुख देती है।" शुकदेव ने दो टूक जवाब देते हुए कहा—"सूर्य से बर्फ गिरे या चन्द्रमा से ताप बिखरे तो भी परिग्रह संग्रह से तीनों कालों में भी सुख मिलना सम्भव नहीं।"

व्यास जी ने पुत्र को दुलारते हुए कहा—"एक शिशु जब धूल में लिपटता है, तेज चलता है या तुतला कर बोलता है तो सब को मोह लेता है।" उत्तर में शुकदेव जी बोले—"धूल में लिपटे अपवित्र शिशु से सन्तोष लेना अज्ञान है, उसे सुख कहना भी अज्ञान है।"

व्यास जी ने कुछ कड़ेपन से कहा—"सन्तानहीन नरक जाता है।" पिता की इस उक्ति के जवाब में शुकदेव जी बोले—"यदि बेटे से ही स्वर्ग मिलता तो सूअरों, कुत्तों, टिड्डियों को सब से पहले मिलता।"

व्यास जी ने अन्त में कहा—"पुत्रदर्शन से मनुष्य पितृ-ऋण से छूटता है, पौत्रदर्शन से देव-ऋण से और प्रपौत्रदर्शन से स्वर्ग मिलता है।" इस उक्ति का उत्तर देते हुए शुकदेव जी बोले—"कई पीढ़ियां जीने वाले गिद्ध कहां जाते हैं, मालूम नहीं, उन्हें किसी ऋण से मुक्ति और स्वर्ग नहीं मिलता यह पक्की बात है।"

पुत्र शुकदेव के उत्तरों से व्यास जी हतप्रभ हो गए। और पिता की ओर देखे बिना शुकदेव वन की ओर चल पड़े।

प्रस्तुति—**नरेन्द्र विद्यावाचस्पति**

वेदप्रकाश

संस्थापक : स्वर्गीय श्री गोविन्दराम हासानन्द

वर्ष ४४, अंक ४ वार्षिक मूल्य : बीस रुपये नवम्बर १९९५

सम्पा॰ अजयकुमार आ॰ सम्पादक : स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

जीवेम शरदः शतम्

[सौ वर्षों तक स्वस्थ रहते हुए जीवित रहें]

ओ३म् तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् ।
पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳ शृणुयाम
शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम
शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ॥ —य॰३६।२४॥

(तत्) वह ईश्वर (चक्षुः) सर्वद्रष्टा, सब का मार्गदर्शक (देवहितं) देवों, विद्वानों का परम हितकारी (शुक्रम्) परम पवित्र है। वह (पुरस्तात्) सृष्टि के पूर्व से ही (उच्चरत्) वर्तमान है । उसकी कृपा से अथवा उससे सनेत्र रहते हुए उसकी आज्ञा एवं शिक्षानुसार जीवनयापन करते हुए हम (**शरदः शतं पश्येम**) सौ वर्ष तक देखें । सौ वर्ष तक जीवें, सौ वर्ष तक सुनें, सौ वर्ष तक बोलें, सौ वर्ष तक अदीन/स्वतन्त्र होकर रहें और उसी परमेश्वर की कृपा से सौ वर्ष के उपरान्त भी हम देखें, सुनें, सुनावें और स्वतन्त्र रहें ।

मनुष्य की प्राकृत आयु १०० वर्ष है । यदि प्राकृत नियमों, सामाजिक, सुविधाओं और व्यक्तिगत साधनों की अनुकूलता रहे तो मनुष्य साधारणतः सौ वर्षो की सुखपूर्ण आयु प्राप्त कर सकता है ।

'स्वस्थता' का अर्थ है —स्वस्थता, स्व स्थिति । स्व का अर्थ है आत्मा 'स्थ' का अर्थ है स्थिति । तनु शरीर अथवा जीवन की आत्मा में सुष्ठु और परिपूर्ण स्थिति का नाम ही स्वास्थ्य है ।

मानव जीवन भौतिक और अभौतिक सत्ताओं का समन्वय है। शरीर प्राण बुद्धि, मेधा, मन, चित्त, जीवन के ये छः अंग भौतिक हैं,

पंचभूतों के अंशभूत हैं । आत्मा अभौतिक है । इस प्रकार सम्पूर्ण स्वास्थ्य के सम्पादन के लिए सप्त स्वस्थों-(स्वस्थ शरीर, स्वस्थ प्राण, स्वस्थ बुद्धि, स्वस्थ मेधा, स्वस्थ मन, स्वस्थ, चित्त और स्वस्थ आत्मा) का सम्पादन करना होता है ।

शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम् ।

अपने जीवन को धार्मिक तथा सुखमय बनाने का सब से प्रथम और मुख्य साधन स्वस्थ और बलवान् शरीर ही है ।

धर्मार्थकाममोक्षाणामारोग्यं मूलमुत्तमम् ।

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्राप्ति का श्रेष्ठ एवं मुख्य साधन शारीरिक आरोग्यता ही है । शरीर स्वस्थ एवं बलवान् है तो ही हम अपने पुरुषार्थ से धन कमा कर सांसारिक सुखों का उपभोग करते हुए परोपकार, समाज व राष्ट्र की सेवा तथा आत्मचिन्तन एवं प्रभु भक्ति द्वारा मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं ।

आयुर्वेद में स्वस्थ व्यक्ति की परिभाषा इस प्रकार दी है–

समदोषः समाग्निश्च समधातुमलक्रियः ।
प्रसन्नात्मेन्द्रियमनः स्वस्थ इत्यभिधीयते ॥ सुश्रुत १५।४८

जिस व्यक्ति के शरीर में तीनों दोष (वात-पित्त-कफ) साम्य अवस्था में हों, पंच महाभूतों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश) की पांच, सात धातुओं (रस, रक्त, मांस, अस्थि, मज्जा, शुक्र) की सात और और तेरहवीं जठर अग्नि, ये अग्नियां समान हों, रस-रक्त आदि सातों धातु पुष्ट और समान हों, मल-मूत्र विसर्जन क्रिया ठीक हो, आत्मा इन्द्रियां व मन प्रसन्न अवस्था में हो, उसी व्यक्ति को स्वस्थ कहा जा सकता है । समस्त रोग मलों के संचय से ही उत्पन्न होते हैं ।

सर्वेषामेव रोगाणां निदानं कुपिता मलाः ।

यह संचित मल ही कभी कफ होकर, कभी अतिसार होकर, कभी फोड़ा-फुन्सी बनकर कभी ज्वर तथा वमन के रूप में परिणत होकर नाना प्रकार के रोगों के नामों से प्रकट होते हैं । इन मल जन्य रोगों को आचार्य चरक के अनुसार निम्न उपायों से दूर किया जाता है।

पाचनान्युपवासश्च व्यायामश्चेति लङ्घनम् ।
चतुष्प्रकारा संशुद्धिर्वमनञ्च विरेचनम् ॥

पाचक पदार्थो के खाने, उपवास, व्यायाम और लंघन के करने तथा वमन और विरेचन का प्रयोग करने से मलों की शुद्धि हो जाती है ।

इसके अतिरिक्त इन मलों की शुद्धि का उपाय प्राणायाम है।

दह्यन्ते ध्मायमानानां धातूनां हि यथा मलाः ।
तथेन्द्रियाणां दह्यन्ते दोषाः प्राणस्य निग्रहात् ॥

जिस प्रकार अग्नि में तपाने से धातुओं के मल नष्ट हो जाते हैं उसी प्रकार प्राणायाम करने से इन्द्रियों के दोष नष्ट हो जाते हैं । आयुर्वेद में स्वस्थ रहने के लिए निम्न श्लोक में कितना सुन्दर मार्ग दर्शन किया है—

पथ्ये सति गदार्त्तस्य किमौषधनिषेवणैः ।
पथ्येऽसति गदार्त्तस्य किमौषधनिषेवणैः ॥

यदि पथ्य यानि आहार-विहार ठीक हों तो औषधि की क्या जरूरत है । और यदि अपथ्य है, अर्थात् आहार-विहार गलत हैं तो औषधि से क्या होने वाला है, क्योंकि रोग के जाने में पथ्य ही प्रधान है ।

आज के अधिकांश डॉक्टर, हकीम एवं वैद्यों ने स्वास्थ्य को अपनी अच्छी मोटी कमाई का साधन बना लिया है । आज के डॉक्टर रोगों की संख्या बढ़ाने और फिर उनके लिए दवा की गिनती बढ़ाने में लगे हुए हैं । आम जनता को विज्ञान के नवीन आविष्कार के नाम से भ्रमित किया जा रहा है । शरीर के अलग-अलग हिस्सों के विशेषज्ञ बन गये हैं । कोई हार्ट-स्पेशलिस्ट है तो कोई ब्रेन स्पे॰, कोई आई स्पे॰, कोई किडनी स्पे॰ और कोई कहीं का स्पेशलिस्ट है । अल्ट्रासाउण्ड और एक्सरे की रिपोर्टें भी झूठी साबित हो रही हैं । रोग कुछ और है और निदान कुछ और ही बतलाया जाता है । साधारण-साधारण रोगों में ऑपरेशन की सलाह देकर रोगियों को भयभीत करके उनसे मोटी धनराशि ऐंठी जा रही है । आज का भोला-भाला मानव अपना सब कुछ लुटाकर मृत्यु को प्राप्त हो रहा है और अपने दुर्भाग्य को रो रहा है । ग्रामों व कस्बों में तो नीम हकीमों, डॉक्टरों की बाढ़ आ गई है तथा जनता के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ हो रहा है ।

रोगों का कारण

डॉक्टरों का यह कहना बिल्कुल गलत और बेबुनियाद है कि कीटाणुओं से रोग उत्पन्न होता है । क्योंकि कीटाणु तो मल पदार्थो से सम्भव हैं, मल कीटाणुओं से नहीं । धीरे-धीरे ये कीटाणु मल पदार्थो के साथ-साथ शरीर को भी खाने लगते हैं और शरीर नाना प्रकार की बीमारियों का शिकार हो जाता है । उदाहरणार्थ : मलेरिया मच्छरों से पैदा नहीं होता, मलेरिया तो गरिष्ठ पदार्थ खाने, कब्ज होकर रक्त दूषित हो जाने से होता है और इसी प्रकार क्षय रोग भी कीटाणुओं से न होकर खराब भोजन से तथा गन्दगी में रहने से तथा तीव्र रोगों के दवा के द्वारा दबाने से होता है । संसार में जितने भी तीव्र रोग होते हैं वे सब प्रकृति विरुद्ध भोजन करने के कारण होते हैं । परन्तु जितने भी दीर्घ रोग, क्षय, कैन्सर, कुष्ठ, लकवा आदि हैं वे सब इन डॉक्टरों की दवा, इनजैक्शन

के पैदा किये हुए होते हैं ।

रोग क्यों होते हैं ?

प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति रोग और चिकित्सा सम्बन्धी विज्ञान है । इसका सब से पहला सिद्धान्त यह है कि हर प्रकार के रोगों की उत्पत्ति का कारण एक ही है, यह कि शरीर में विजातीय द्रव्य (दोष) और मल पदार्थों का संचय हो जाना ।

हम जो कुछ भोजन करते हैं सार भाग तो रक्त बनकर हमारे शरीर का अंग बन जाता है । शेष अवशिष्ट भाग मल के रूप में बाहर निकल जाये तो मनुष्य को कोई भीतरी रोग न हो । मल के अवरोध के कारण उसमें सड़न उत्पन्न होकर एक प्रकार की भाप (गैस) बन कर ऊपर उठने लगती है । वह जिस अंग पर जम जाती है, उसी अंग का रोग हो जाता है । जोड़ों पर जमकर गठिया, गुर्दों में जमकर कलिक पेन, आमाशय में जमकर मन्दाग्नि, गैस ट्रबल, मस्तिष्क में जमकर नजला, सिरदर्द आदि अनेक रोग उत्पन्न होते हैं । कारण सभी रोगों का एक ही है–मलाशय में मल का सड़ना ।

रोगी होने का दूसरा कारण है–भोजन सम्बन्धी भूलें ।

आज पश्चिम की उपभोक्तावादी संस्कृति के टी.वी. के माध्यम से अन्धाधुन्ध प्रचार के कारण भोगों के अत्यधिक होने से भोग के कारण रोगों की भरमार हो रही है । नित्य नये-नये रोग सुनने में आ रहे हैं । पश्चिम वाले कहते हैं कि मानव जीवन है ही भोगों को भोगने के लिए। जितना भोग सको भोगो, फिर बीमार होने पर हम आपका इलाज करेंगे।

परन्तु हमारे ऋषियों की चेतावनी है कि–**भोगे रोगभयम्** । भोग विलास किये सब सुख से, फिर तन होता पीड़ित रोगों और दुःख से। सभी प्रकार के नशे, मदिरा, भांग, अफीम, गांजा, तम्बाकू, अनेक रोगों को उत्पन्न करते हैं । शीतल पेय, चाय, वनस्पति घी, मांस, अण्डा भी शरीर में रोगों को बढ़ाते हैं ।

वैरोधिक आहार

चरक संहिता चिकित्सा २४।६० में कहा गया है–प्राणियों का प्राण अन्न ही होता है किन्तु इसका अविधिपूर्वक अर्थात् युक्ति व मात्रा का पालन न करते हुए सेवन करने पर यही प्राणों को नष्ट करने वाला हो जाता है । उदाहरण के लिए रात में दही नहीं खाना चाहिए । खाने से कफ बढ़ जायेगा । खट्टा दही कफ और पित्त बढ़ाता है । शहद को गरम पदार्थ में मिलाकर नहीं खाना चाहिए । गुड़ के साथ मूली, शहद के साथ मूली, घी व शहद समान मात्रा में, दही के साथ खीर, चाय पीने के बाद कुल्फी खाना हानिकारक होता है । नियम विरुद्ध

भोजन का दृश्य वैवाहिक भोजों पर देखने को मिलता है । अथवा किसी विशिष्ट मेहमान के घर आने पर होता है ।

ओ भोले मानव ! जरा अपने प्राचीन ऋषियों एवम् आयुर्वेदाचार्यो की वाणी पर विश्वास करके तो चल कर देख, उनके अनुसार करने से न तो कभी रोग होंगे और न डॉक्टरों की ही आवश्यकता होगी ।

प्राकृतिक चिकित्सा का सिद्धान्त है कि रोग अनेक नहीं किन्तु उनके रूप अनेक हैं । पेड़ की डालें, पत्ते, टहनियां बहुत हैं पर जड़ एक ही है । यदि किसी पेड़ को गिराना है तो उसके डाल, पत्ते तोड़ने के झगड़े में न पड़कर उसकी जड़ काटनी चाहिए । डाल व पत्ते अलग करने पर वे कुछ दिनो बाद स्वयं पनप जाते हैं । ऐसा हम प्रत्यक्ष देखते हैं । दवाइयों से रोग दबा दिया जाता है पर उसकी जड़ नहीं जाती है । कुछ समय बाद वही रोग और अनेक रोगों को साथ लेकर प्रकट हो जाता हे ।

जैसे आध्यात्मिक दुःखों का कारण अज्ञान है । वैसे ही मनुष्य की शारीरिक पीड़ाओं का कारण भी अज्ञान ही है । स्वस्थ रहना स्वाभाविक है । बीमार रहना अस्वाभाविक । नियम विरुद्ध एवम् अशुद्ध आहार से शारीरिक रोग होते हैं । व्यावहारिक भूल से मानसिक क्लेश होते हैं । दुश्चिन्तन, जल्दबाजी, चित्त की चंचलता, संस्कारों के दुष्ट होने के कारण तथा श्रद्धा, तप, ईश्वर विश्वास एवं समर्पण भाव की कमी से आत्मिक दुःख होते हैं ।

स्वास्थ्य सन्दर्भ में आहार ब्रह्मचर्य एवं निद्रा का विशेष महत्त्व है ये तीनों स्वास्थ्य के आधार स्तम्भ हैं । भोजन के विषय में आयुर्वेद का सिद्धान्त-हितभुक्, मितभुक्, ऋतभुक्, सदैव ध्यान में रखना चाहिए। जो भी भोजन हम करें वह सात्त्विक, पौष्टिक एवं हमारे स्वास्थ्य के लिए हितकारी हो । भोजन उतना ही करें कि खा चुकने के बाद पेट भारी व तना हुआ प्रतीत न हो तथा ऋतु के अनुकूल एवं नेक कमाई का हो ।

भोजन करते समय प्रभु का धन्यवाद करके प्रसन्न चित्त होकर, शान्ति के साथ धीरे-धीरे खूब चबा-चबा कर आनन्द का अनुभव करते हुए करना चाहिए । कभी भी जल्दबाजी में क्रोधावस्था में भोजन न करें । रोगी, अस्वस्थ, कुशील व्यक्ति एवं रजस्वला स्त्री के हाथ का बना भोजन न करें । जहां तक बने सूर्योदय से पूर्व व सूर्यास्त के बाद भोजन न करें । भोजन के समय पानी ताजा, सादा २-४ घूंट से अधिक न पियें, अधिक पीने से पाचन शक्ति निर्बल हो जाती है। भोजन के (1-1 ½) एक या डेढ़ घण्टे बाद खूब पानी पीये तथा अन्य समय भी पानी पीते रहें । प्रतिदिन ढाई, तीन लीटर पानी पीना आवश्यक है ।

फ्रिज या बर्फ का अधिक ठण्डा पानी पीने से कण्ठ के रोग हो जाते हैं अतः उससे भी बचें। कहावत प्रसिद्ध है जैसा खाये अन्न वैसा बने मन। जैसा पीये पानी वैसी बने वाणी। भोजन करते समय दाहिना स्वर चलना चाहिए जिससे जठराग्नि प्रदीप्त रहे और भोजन का पाचन ठीक प्रकार हो जाये। पाचक/पाचिका की प्रकृति का भोजन पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। उनके लिए यह अनिवार्य है कि वह अपने शरीर व वस्त्रों से तो स्वच्छ रहें ही, साथ ही अपने विचार व भावनाओं को भी अत्यन्त निर्मल रखें। अतः भोजन बनाने का कार्य सेवकों से न कराकर गृहिणियों को स्वयं करना चाहिए।

भोजन के सम्बन्ध में वेद माता का आदेश भी सदैव ध्यान में रखें– **आपो ! हिष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन।**
महे रणाय चक्षसे ॥ य०११/५०॥

आपः जलो ! तुम (हि) निस्सन्देह (मयः भुवः) सुखकारी (स्थ) हो। (ता) वे तुम (नः) हमें (ऊर्जे) बल के लिए (महे रणाय) महान् शब्द के लिए (चक्षसे) दिव्य दृष्टि के लिए (दधातन) धारण करो। भोजन करने से पूर्व इस मन्त्र का एक बार पाठ करके जल के तीन आचमन कीजिए। आचमन करने से जठराग्नि तीव्र होती है। और स्वाद शक्ति बढ़ती है। इस मन्त्र में बतलाया गया है कि पीने का पानी सुखप्रद, स्वास्थ्यप्रद एवं नीरोगता सम्पादक होना चाहिए। वस्त्र से छने जल का ही पान करना चाहिए।

वस्त्रपूतं जलं पिबेत्।

आचमन के पश्चात् भोजन का अवलोकन करते हुए निम्न मन्त्र का पाठ करके भोजन आरम्भ करें–

ओ३म् अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यन्-अमीवस्य शुष्मिणः।
प्र-प्र दातारं तारिष ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ॥
–य० ११/३८॥

हे अन्नपते ! अन्न के स्वामी प्रभो हमें रोग निवारक बलकारक अन्न का दान कर। दाता अन्नदानी को अधिकाधिक बढ़ा। हमारे दो पाये और चौपायों के लिए पराक्रम प्रदान कर।

अन्न ही प्राण (जीवन) है। अन्न से ही प्राण, वीर्य और बल की वृद्धि होती है। इस मन्त्र में निर्देश है कि रोग निवारक, स्वास्थ्य-वर्धक बलकारक, पुष्टिवर्धक भोजन का ही सेवन करें।

अन्न शब्द का प्रयोग निरामिष (मांसेतर) आहार के लिए ही होता है। अन्नाहार में शाकाहार तथा फलाहार तो सम्मिलित हैं किन्तु मांसाहार और अण्डाहार नहीं। मांसाहार न मानवाहार है न यह दीर्घायुष्कर और न ही स्वास्थ्यप्रद है। इस सन्दर्भ में इस सूत्र को सदैव याद रखें।

"आहारशुद्धौ सत्त्वशुद्धिः" भोजन निष्पादन बड़ी स्वच्छता और शुद्धता के साथ किया जाना चाहिए। भोजनालय, भोजन पात्र तथा अन्य उपकरण भी अतिशय शुद्ध हों। भोजन बनाने वाला या बनाने वाली भी अन्दर बाहर से सर्वथा निर्मल व पवित्र होने चाहिए।

भोजन विज्ञानवेत्ताओं का यह निश्चित मत है कि अभक्ष्य (अण्डा-मांसादि) और अपेय (मदिरा, धूम्रपान, चाय व कैम्पा कोला आदि) के सेवन से रक्त एवं त्वचा सम्बन्धी अनेक रोग और विकार उत्पन्न होते हैं और साथ ही मनुष्य के शील-स्वभाव पर भी उसका बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। अतः स्वास्थ्याभिलाषी इस प्रकार के खान-पान से सदैव बचे रहें।

ब्रह्मचर्य

ब्रह्मचर्य दो शब्दों ब्रह्म+चर्य से मिलकर बना है। ब्रह्म के प्रसिद्ध अर्थ हैं--ईश्वर, वेद, ज्ञान और वीर्य तथा चर्य के अर्थ हैं--चिन्तन, अध्ययन, उपार्जन और रक्षण। इस प्रकार ब्रह्मचर्य के अर्थ हुए ईश्वर-चिन्तन, वेद-अध्ययन, ज्ञान-उपार्जन और वीर्य रक्षण।

ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत। अथर्व॰ ११/५

ब्रह्मचर्य रूपी तप के द्वारा विद्वान् लोग मृत्यु को भी मार भगाते हैं। संसार का वास्तविक स्वास्थ्य, बल, तेज, विद्या, बुद्धि, आरोग्य, ज्ञान-विज्ञान आदि सभी इसी ब्रह्मचर्य पर निर्भर हैं। ब्रह्मचर्य जीवन का आधार है।

आहार-शयन-ब्रह्मचर्ययुक्त्या प्रायोजितः।
शरीरं धार्यते नित्यमागारमिव धारणैः॥

आहार और निद्रा के साथ ब्रह्मचर्य शरीर का आधार है जिस प्रकार आधार के विना भवन नष्ट हो जाता है। उसी प्रकार ब्रह्मचर्य के अभाव में शरीर रूप भवन नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है।

वेद में ब्रह्मचर्य की महिमा निम्न मन्त्र में प्रकट की गई है।

यदाबध्नन् दाक्षायणा हिरण्यं शतानीकाय सुमनस्यमानाः।
तत्ते बध्नाम्यायुषे वर्चसे बलाय दीर्घायुत्वाय शतशारदाय॥

ओजः, बल, तेज, शक्ति, साहस एवं पराक्रम प्रदान करने वाले सैकड़ों सेनाओं का बल देने वाले जिस वीर्य को उत्तम मन वाले, शिव संकल्प से युक्त मनुष्य धारण करते हैं। हे मनुष्य! सौ वर्षों के जीवन के लिए तेज और ओज के लिए उसी वीर्य का मैं तेरे में आधान करता हूं।

अथर्ववेद के मन्त्र ८।५।१ में आहार से उत्पन्न वीर्य को 'प्रतिसर' मणि कहा गया है जो शरीर में सुरक्षित किये जाने पर रोगों से रक्षण

करके मंगल सिद्ध करता है ।

वीर्य क्या है ? मनुष्य जो आहार करता है उसके पचने पर प्रथम रस बनता है, रस से रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और मज्जा से वीर्य बनता है । चालीस दिन के भोजन से एक किलो रक्त बनता है और उससे फिर एक तोला वीर्य बनता है, तथा एक बार की ही गलती से ही वह नष्ट हो जाता है । इतना मूल्यवान् पदार्थ है यह वीर्य । यह जीवन का सार है, इसलिए इसे 'मणि' कहा गया है।

मरणं बिन्दुपातेन जीवनं बिन्दुधारणात् ।

वीर्य की एक बूंद भी नष्ट करना मृत्यु का कारण है और वीर्य की रक्षा करना ही जीवन है ।

महर्षि धन्वन्तरि जी के शिष्यों के यह पूछने पर ''गुरुदेव! कोई ऐसा उपचार बतलाइये जिसके सेवन से हर प्रकार के रोग नष्ट हो जायें ।'' महर्षि ने कहा–ब्रह्मचर्य रूपी महारत्न, मृत्यु, व्याधि और बुढ़ापे को मार भगाने वाला अमृतरूप परम उपचार है । ब्रह्मचर्य ही परम ज्ञान और परम बल है । इस ब्रह्मचर्य के सेवन से हर प्रकार के अशुभ लक्षण नष्ट हो जाते हैं ।

महर्षि दयानन्द ने कहा था–''इस देश का बिगाड़ ब्रह्मचर्य के नाश से हुआ है और देश का सुधार और उद्धार भी ब्रह्मचर्य के धारण से ही होगा । आज देश को निर्बल और रोगी नवयुवकों की आवश्यकता नहीं है । अपितु ऐसे ब्रह्मचारियों की आवश्यकता है जिनके शरीर की नसें लोहे तथा स्नायु इस्पात की भांति सुदृढ़ हों एवं हृदय वज्र के समान हो ।

ब्रह्मचर्य के नाश के परिणाम स्वरूप 'एड्स' जैसी विश्वव्यापी महामारी से बचने का एकमात्र उपाय ब्रह्मचर्य पालन ही है ।

योग जीवन-पद्धति अपनाने अथवा योग-साधना के द्वारा ही ब्रह्मचर्य सिद्ध होता है । संसार में दो ही जीवन-पद्धतियां हैं–प्रथम योग जीवन-पद्धति और दूसरी भोग जीवन-पद्धति । अतः सौ वर्ष तक सुस्वास्थ्य के साथ सुखी जीवन के लिए योग जीवन-पद्धति पर चलना अनिवार्य है ।

निद्रा

आयुर्वेद चरक संहिता सूत्र २१।३६ में लिखा गया है–

निद्रायत्तं सुखं दुःखं पुष्टिः कार्श्यबलाबलम् ।
वृषता क्लीबता ज्ञानमज्ञानं जीवितं न च ॥

सुखपूर्वक गहरी नींद सोने से शरीर में आरोग्य, पोषण, बल और शुक्र की वृद्धि होती है । ज्ञानेन्द्रियां उचित रूप से सक्रिय और

सबल रहती हैं। जबकि नींद पूरी न होने पर शरीर में आलस्य, थकावट, दुर्बलता, बल की हानि, यौन-दौर्बल्य, इन्द्रियों में निर्बलता, सिर-दर्द तथा अन्य व्याधियों की उत्पत्ति होती है।

रात्रि ९-१० बजे से प्रातः ४-५ बजे तक निद्रा का सर्वोत्तम समय है। जहां तक बन सके एकान्त, शान्त, स्वच्छ और निर्विघ्न स्थान या कक्ष में शयन करना चाहिए। तकिया दो अंगुल से ऊंचा न हो तथा उत्तर और पश्चिम को सिर करके न सोये। गाढ़ निद्रा शरीर के कण-कण में नवजीवन का संचार करती है। तथा मन, बुद्धि व चित्त को भी प्रसन्न कर देती है। अंग्रेजी की यह कहावत सभी जानते हैं–

Early to bed and early to rise.
Makes a man healthy, wealthy & wise.

गहरी नींद लेने के लिए प्रथम तो आप सोने का समय निश्चित करें तथा दूसरे दिनभर खूब शारीरिक श्रम करें। परन्तु चिन्ता व मानसिक तनावों से दूर रहें।

निद्रा दो प्रकार की होती है। (१) योग निद्रा (२) भोग निद्रा। भोग निद्रा निकृष्ट कोटि की निद्रा है। बिस्तर पर जाते हुए यदि मनुष्य किसी भी प्रकार के विकृत विचारों और चिन्ताओं से ग्रस्त होकर सोता है तो ऐसी निद्रा भोग निद्रा कहलाती है तथा स्वास्थ्य की परम शत्रु होती है।

योग निद्रा–एक परमोत्कृष्ट साधना है। जिसके सिद्ध होने पर मानव स्वस्थ रहता हुआ अतिशय सुखी, प्रसन्न और आनन्दित रहता है। जब आप बिस्तर पर लेटने जायें तो ऐसी भावना कीजिये कि आप शयन योगासन में स्थित हो गये हैं। जगत् माता प्रभु की अमृतमयी गोद में लेट गये हैं। अब अपने नेत्र बन्द करके छः शिव संकल्प मन्त्रों **'ओ३म् यज्जाग्रतो दूरमुदैति......''** का अर्थ सहित पाठ करके आत्मना कहिए।

''तेजो यत् ते रूपं कल्याणतमं तत् ते पश्यामि। ईशा॰ १७

हे परम सुन्दर देव! मैं अपने शरीर, बुद्धि, चित्त और प्राण को सर्वथा सुषुप्त करके आत्म-जागरण द्वारा तेरे परम तेजोमय, परम कल्याणकारी, परम मनोहर, परम सुन्दर, प्रकाशमय स्वरूप में निमग्न होकर आत्मना तुझ से संजुष्ट और संस्पृष्ट होता हूं। ऐसी भावना करके आप अनुभव कीजिये कि आपका शरीर, मन, बुद्धि और प्राण सब सुषुप्त हो रहे हैं। और आप साक्षात् ब्रह्म में प्रविष्ट होकर ब्रह्म का संदर्शन कर रहे हैं। इस अभ्यास से कालान्तर में आपकी निद्रा योग-निद्रा

बन जायेगी । जब आप सोकर उठा करेंगे तो आपको ऐसा लगेगा कि आप योग समाधि से निवृत्त हुए हैं । उठते ही आत्म कामना कीजिए, मैं अपनी शारीरिक जागृति में भी अपनी भावना द्वारा ब्रह्म में निमग्न और समाहित रहता हुआ ईश्वरीय (वेद की आज्ञानुसार) कर्म करूंगा, प्रत्येक कार्य प्रभु की सेवा जान कर करूंगा ।

सप्त स्वस्थों के सम्पादन के लिए आदर्श दिनचर्या–

(१) ब्राह्ममुहूर्त में उठना–अपने शरीर, मन बुद्धि आदि को स्वस्थ, निर्विकार तथा बलवान् बनाने के लिए और दीर्घजीवी बनने के लिए प्रातः ब्राह्ममुहूर्त में उठना परमावश्यक है ।

(२) उष:पान–प्रातः अमृतवेला में उठकर शौच जाने से पूर्व ही रात्रि में ढककर रखा हुआ जल (तांबे के बर्तन में रखा उत्तम होता है ।) नित्य प्रति दो गिलास से चार गिलास तक बैठकर धीरे-धीरे पी जायें । कुछ देर टहलने के पश्चात् शौच जायें । विज्ञानवेत्ताओं ने लिखा है कि जो व्यक्ति उपर्युक्त प्रकार से सवा लीटर जल प्रतिदिन पीने का अभ्यास बना लेगा–वह बिना किसी औषधि के बीसों रोगों से मुक्त रहेगा। जो व्यक्ति नासिका से १-२ गिलास पानी पीने का अभ्यास कर लेंगे उनकी नेत्र ज्योति गरुड के समान और बुद्धि तीव्र होकर सिरदर्द, नजला-जुकाम, असमय बाल सफेद होना आदि अनेक रोगों से मुक्त हो जायेंगे ।

(३) प्रातः भ्रमण–सूर्योदय से १ घण्टा पूर्व तथा १ घण्टे बाद का समय प्रातःभ्रमण का सर्वोत्तम है । इस समय की मन्द-मन्द चलती हुई वायु में प्राणदायिनी जीवनी शक्ति (आक्सीजन) बहुत अधिक रहती है । भ्रमण के समय परस्पर बात न करके लम्बी गहरी श्वास लेने से सर्वाधिक लाभ होता है ।

(४) तेल मालिश–शरीर को स्वस्थ बलवान् तथा नीरोग बनाने के लिए नित्य प्रति सरसों या तिल के तेल से मालिश करनी चाहिए । मालिश से बुढ़ापा, थकावट आदि रोग दूर हो जाते हैं । मालिश से सर्वांगीण विकास होता है । मालिश दो प्रकार की होती है । एक तेल से दूसरी बिना तेल से । मालिश स्वयम् अपने हाथों से सिर से आरम्भ करके नीचे पगतल तक करते चले आना चाहिए ।

(५) स्नान–दांतों व जिह्वा की सफाई के पश्चात् नित्य प्रतिदिन शीतल जल से स्नान करना चाहिए । अथर्ववेद में कहा गया है ।

"अप्स्वन्तरम्-अमृतमप्सु भेषजम् ।" जल के अन्दर सब तरह के रोगों को दूर करने की औषधि तथा अमृत विद्यमान है । (जाड़े के मौसम में तथा रोगी व्यक्ति थोड़े गर्म जल का प्रयोग कर सकते हैं)

(६) प्रभु-भक्ति–स्नान के पश्चात् प्रत्यक मनुष्य को प्रभु

की भक्ति/उपासना अवश्य करनी चाहिए । इससे शारीरिक, मानसिक एवम् आत्मिक शक्ति प्राप्त होगी ।

(७) व्यायाम एवं प्राणायाम–प्रतिदिन नियमपूर्वक व्यायाम एवं प्राणायाम करने से शरीर स्वस्थ, बलवान् एवं नीरोग बन जाता है।

''सब व्यायामों में यौगिक व्यायाम ही सर्वोत्कृष्ट हैं ।''

जो मनुष्य योगाभ्यास द्वारा अपने शरीर को योगाग्निमय बना लेता है । उसे न रोग होते हैं न बुढ़ापा आता है और न ही वह जल्दी मृत्यु को प्राप्त होता है । यौगिक व्यायाम एवं प्राणायाम स्त्री-पुरुष, युवा-वृद्ध, बालक-बालिकाएँ सभी सुगमता पूर्वक कर सकते हैं । इसके लिए एक सप्ताह का प्रारम्भिक प्रशिक्षण किसी सुयोग्य योगाचार्य से प्राप्त कर लेना आवश्यक है ।

(८) मानसिक शक्ति (Will Power)–प्रत्येक व्यक्ति को आजीवन १०० वर्षों तक स्वस्थ रहने की दृढ़ कामना करनी चाहिए। कभी भूल कर भी रोगी होने का विचार मन में नहीं लाना चाहिए। **''संकल्पोऽयं पुरुषः''** व्यक्ति जैसा संकल्प तथा विचार करता है वह वैसा ही हो जाता है ।

यो यथा चिन्तयति तथा भवति ।

अतः सदा श्रेय चिन्तन ही कीजिये। जो स्वास्थ्य का चिन्तन करता है वह स्वस्थ हो जाता है । जो रोग का चिन्तन करता है वह रोगी हो जाता है । जो योग का चिन्तन करता है वह योगी हो जाता है, जो ब्रह्म का चिन्तन करता है वह ब्रह्मगुणों से युक्त होकर ब्रह्मवत् बन जाता है। अतः सदैव स्मरण रखें–''मैं स्वस्थ हूं कभी रोगी नहीं हो सकता ।'' सर्वदा स्वस्थ रहते हुए सौ वर्षों से भी अधिक जीवन धारण करके सुकर्म करते हुए समाज एवं राष्ट्र की सेवा करते हुए जीवन के अन्तिम उद्देश्य मोक्ष को प्राप्त करूंगा ।

विशेष–प्रायः ऐसा देखा जाता है जब कभी दो मित्र अथवा सम्बन्धी कुछ दिनों बाद परस्पर भेंट करते हैं तो कहते हैं–'अरे ! तुम तो बड़े दुबले/कमजोर हो गये हो, क्या बात है ? क्या कारण है ? ऐसे शब्द कभी भूलकर भी नहीं कहने चाहिए । इन शब्दों का स्वास्थ्य पर बड़ा प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है । निम्न उदाहरण से इसका रहस्य आप भली-भांति समझ लें ।

एक पहलवान से उसके नगरवासी दुकानदार बड़े परेशान व दुःखी थे । कारण वह जिससे भी जो वस्तु ले लेता था उसका भुगतान नहीं करता था । साथ ही किसी को भी यह साहस नहीं था कि उसे सामान देने को मना कर दे । जब उनका काफी पैसा पहलवान के नाम हो

गया और उन्हें मिलने की भी आशा नहीं रही तब उन्होंने परस्पर मिलकर विचार किया । इस पहलवान से कैसे छुटकारा मिले । उनमें से किसी वयोवृद्ध ने उन्हें एक योजना बना कर समझायी कि कल से वह जिस किसी से भी सामान लेने पहुँचे उसे सभी बस यही कहें। "अरे पहलवान साहब तुम तो बड़े कमजोर हो गये हो । तुम्हें क्या हो गया है ?" सभी दुकानदारों से ऐसे वाक्य सुनने से उसने अपने को कमजोर व रोगी होना समझ लिया तथा कुछ ही दिनों में उसने खाट पकड़ ली। और थोड़े दिन बाद वह परलोकवासी हो गया ।

(८) सदा प्रसन्न रहना—अपने मन को सदा प्रसन्न रखो। आपत्ति तथा संकटों में भी खूब हंसो तथा मुस्कराते रहो । अंग्रेजी की यह कहावत सदैव याद रखो—

Laugh three times a day.
Keep the doctor away.

दिन में तीन बार खूब कहकहे लगाकर दिल खोलकर हंसो और डॉक्टर को दूर रखो । सदा प्रसन्न रहने वाला, चिन्ता व क्रोध न करने वाला मनुष्य सदा स्वस्थ, बलवान् दीर्घायु वाला होता है । हंसी तीन प्रकार की होती है । (१) सदा मुस्कराते रहना । (२) गूंगे मनुष्यों जैसी हंसी । (३) खूब कह कहे लगाकर हंसना । हंसने से शरीर के रोम-रोम खुल जाते हैं।

निम्न वेद मन्त्र में वेद माता मनुष्यमात्र को सौ वर्षों तक सुख पूर्वक जीने का सन्देश दे रही है ।

ओं शतं जीव शरदो वर्धमानः शतं हेमन्ताञ्छतमु वसन्तान् ।
शतमिन्द्राग्नी सविता बृहस्पतिः शतायुषा हविषेमं पुनर्दुः ॥

प्रत्येक मनुष्य को नीरोगी रहकर सौ वर्षों, सौ हेमन्त और वसन्त ऋतुओं तक जीने का प्रयत्न करना चाहिए । इन्द्र-विद्युत् चिकित्सा, अग्नि-चिकित्सा, सूर्य किरण-चिकित्सा, बृहस्पति-मानस चिकित्सा, तथा हवन-चिकित्सा इनका योग्य रीति से सेवन करने पर अवश्य दीर्घायु प्राप्त होती है । हे वीर ! तू शतायु बन ।

वामशायी द्विभुञ्जानः षण्मूत्री द्विपुरीषकः ।
व्यायामी ब्रह्मचारी च शतं वर्षाणि जीवति ॥

बायीं करवट सोने वाला, दिन में दो बार भोजन करने वाला, छः बार पेशाब जाने वाला तथा दो बार मल त्यागने वाला, नित्य व्यायाम करने वाला तथा वीर्य की रक्षा करने वाला सौ वर्ष तक जीवित रहता है ।

प्राकृतिक चिकित्सा

प्राकृतिक चिकित्सा के तीन मुख्य भाग हैं—

(१) उपवास (२) स्नान (३) मिट्टी चिकित्सा ।

(१) उपवास चिकित्सा—शारीरिक दोषों, रोगों तथा विजातीय तत्त्वों को नष्ट करने का उपवास एक परम सुन्दर उपाय है। सप्ताह में अथवा पक्ष में एक दिन का उपवास अवश्य करना चाहिए। उपवास काल में केवल नीबू-रस मिला जल पीना चाहिए। तथा एनीमा द्वारा आंतों में एकत्र मल की सफाई अवश्य करनी चाहिए।

(२) स्नान चिकित्सा—जल प्रभु की अमूल्य देन है।

अप्स्वन्तरममृतमप्सु भेषजम् ।

जलों के अन्दर अमृत है और सर्वरोगनाशिनी औषध है। इस चिकित्सा में (१) पेडू स्नान (२) इन्द्रिय स्नान (३) वाष्प स्नान एवं (४) सूर्य स्नान प्रमुख हैं।

(३) मिट्टी चिकित्सा—मिट्टी के अन्दर सब तत्त्वों की जीवनी शक्ति तथा रोग निवारक शक्ति विद्यमान है। अनेक रोग केवल मिट्टी के प्रयोग से ही ठीक होकर स्वास्थ्य लाभ होता है।

विस्तार के लिए प्राकृतिक चिकित्सा सम्बन्धी साहित्य पढ़ें तथा जटिल रोगों में अनुभवी व्यक्ति के निर्देशन में इस चिकित्सा का लाभ उठायें। आरोग्य मन्दिर-गोरखपुर का साहित्य उत्तम है।

सूर्य किरण-चिकित्सा

(सूर्य की किरणों व रंगीन बोतलों के पानी से इलाज)

सूर्य की किरणों में रोग निवारण करने तथा शरीर पुष्ट करने की अमोघ शक्ति है। ऋग्वेद के निम्न मन्त्र में बतलाया गया है कि जलों में सब औषध हैं और जब अग्नि (सूर्य किरणें) जलों के साथ मिल जाती हैं, तो वह जल अनेक रोगों को दूर करने वाले होते हैं।

अप्सु मे सोमो अब्रवीदन्तर्विश्वानि भेषजा ।
अग्निं च विश्वशम्भुवमापश्च विश्वभेषजी ॥

इस चिकित्सा पद्धति को समझने के लिए भी सुनील शर्मा की पुस्तक—'धूप-पानी' पढ़ें व लाभ उठायें। **प्राप्ति-स्थान—** *श्री विजयकुमार गोविन्दराम हासानंद, ४४०८, नई सड़क, दिल्ली-६*

स्पर्श एवं मार्जन चिकित्सा

वेद माता निम्न मन्त्र के द्वारा प्रत्येक स्त्री-पुरुष के दोनों हाथों में सर्वरोग निवारक गुण/औषधियां बतला रही हैं—

अयं मे हस्तो भगवानयं मे भगवत्तरः।
अयं मे विश्वभेषजोऽयं शिवाभिमर्शनः॥

—ऋ॰१०।६०।१२, अथर्व॰ ४।१३।६

मेरा यह हाथ भगवान् (ऐश्वर्यशाली) है। यह मेरा हाथ

अतिशय भगवान् (अधिकाधिक ऐश्वर्यशाली) है । मेरे हाथ में विश्व के सभी रोगों की समस्त औषधियां हैं और मेरे हाथ का स्पर्श कल्याणकारी, सर्वरोग निवारक एवं सर्व सौन्दर्य सम्पादक है ।

मानसिक पवित्रता एवम् एकाग्रता के साथ उपर्युक्त मन्त्र का मन में पाठ करते हुए दोनों हथेलियों को परस्पर रगड़ कर गर्म करके उनसे पीड़ित अंग का पांच मिनट तक बार-बार सेक कीजिए और बाद में नेत्र बन्द करके कुछ देर तक सो जाइये । रोग मुक्त हो जायेंगे।

रात्रि में सोते समय बिस्तर पर लेट कर और प्रातः उठने से पूर्व इसी मन्त्र का मानसिक पाठ करते हुए दोनों हथेलियों को परस्पर रगड़ कर गर्म करके उनसे सिर से लेकर पांव के तलवों तक का स्पर्श स्वास्थ्य एवं सौन्दर्य की भावना तथा अनुभूति के साथ कीजिए, कुछ ही दिनों में आप अनुभव करेंगे । आपका स्वास्थ्य और सौन्दर्य गुलाब के फूल की भांति सुविकसित होते जा रहे हैं ।

तेल मालिश करते समय एवं स्नान करते समय भी आप इस मन्त्र का मानसिक उच्चारण करके लाभ उठायें ।

आपकी मानसिक पवित्रता एवम् एकाग्रता जितनी अधिक होगी उसी अनुपात में आप इस मन्त्र द्वारा हस्त-चिकित्सा में सफल होते चले जायेंगे तथा स्वयं स्वस्थ रहकर अन्यों के रोग भी दूर करने में समर्थ हो जायेंगे ।

जल-चिकित्सा

नई एवं पुरानी अनेक बीमारियों को दूर करने के लिए जल एक अत्यन्त सरल एवं बढ़िया प्रयोग है । यथायोग्य रीति से पानी पीने से मधुमेह, सिरदर्द, ब्लडप्रेशर, एनीमिया, जोड़ों का दर्द, लकवा, मोटापा, कब्ज, खांसी, दमा, टी॰ बी॰, पेशाब में खून आना, यकृत् के रोग, अम्लपित्त, गैस, पेचिश, आंखों के रोग, स्त्रियों के रोग दूर हो सकते हैं।

सवेरे सोकर उठने के बाद बिना मुंह धोये—रात्रि का रखा हुआ बासी पानी (तांबे के पात्र में हो तो और भी अच्छा है) लगभग डेढ़ लीटर, ४ गिलास बैठकर धीरे-धीरे पीने का अभ्यास बना लें ।

दिल्ली के एक सेठ ने मुझे बतलाया कि उन्हें पेशाब में खून आने लगा था । कई माह तक सारे टेस्ट, अल्ट्रा-साउण्ड, एक्सरे करा के इलाज कराये । न तो कोई डॉक्टर कारण बतला सका और न ही रोग से छुटकारा मिला । दैवयोग से एक सज्जन ने उन्हें उपरोक्त रीति से प्रतिदिन ८ लीटर पानी पीने का परामर्श दिया और वह १० दिन में बिल्कुल ठीक हो गये । आप भी प्रयोग करके जल का चमत्कार देखें व निःशुल्क स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करें ।

६० वर्ष की आयु से ऊपर वालों से–

वृद्धावस्था कैसे सुखदायी हो ?

प्रत्येक व्यक्ति की यह इच्छा रहती है कि मैं कभी भी वृद्ध न होऊं, सदा युवा बना रहूं । इसके लिए सर्वप्रथम आप अपने अन्दर से वृद्धत्व की भावना को सर्वथा निकाल देवें । जिसके जीवन में उल्लास एवम् उमंग है, आनन्द एवम् उत्साह है, मर्दानगी और जिन्दादिली है, वह आयु में वृद्ध होता हुआ भी वास्तव में युवा है । महाभारत काल में द्रोणाचार्य एवं कृपाचार्य ने सौ वर्ष की आयु में तथा भीष्मपितामह ने एक सौ सत्तर वर्ष की आयु में कितना पराक्रम एवं वीरता दिखाई।

प्रकृति का नियम है कि प्रत्येक वस्तु अपनी परिपक्व अवस्था में ही सब से अधिक आकर्षण, सुगन्धित एवं माधुर्ययुक्त हुआ करती है । शरीर शास्त्रियों का कहना है कि वास्तविक जीवन तो ४८ वर्ष के पश्चात् ही प्रारम्भ होता है । बाल्यावस्था के अज्ञान और परवशता तथा यौवन की मदान्धता, अविवेकिता तथा अनियमितता की आंधियों के बाद कहीं विवेकमय, सुनिश्चित जीवन-प्रभात का उदय होता है। जिसमें मनुष्य अपने अनुभव के आलोक में सांसारिक पदार्थों की वास्तविकता को यथार्थरूप से जानकर तदनुसार व्यवहार कर उनसे वास्तविक सुख, शान्ति, एवम् आनन्द को प्राप्त कर सकता है । अतः प्रत्येक व्यक्ति वृद्धावस्था से भयभीत न होकर अपने अन्दर से वृद्धत्व की भावना को सर्वथा निकाल देवे और सदा अपने हृदय में वेदमाता की इन भव्य भावनाओं को जागृत रखें–

जीवेम शरदः शतम् । अदीनाः स्याम शरदः शतम् ।

इसके अतिरिक्त वेद माता के निम्न उपदेश पर प्रत्येक वयोवृद्ध चिन्तन एवं मनन करे ।

मो षु णः सोम मृत्यवे परा दाः पश्येम नु सूर्यम् उच्चरन्तम् ।
द्युभिर् हितो जरिमा सू नो अस्तु परातरं सु निर् ऋतिर् जिहीताम्।।

–ऋ० १०।५९।४।।

अर्थ–(सोम) चन्द्र । (नः मृत्यवे मो सु परा दा) हमें मृत्यु के लिए मत सौंप । हम (उत् चरन्तम् सूर्यम् नु पश्येम) उदय होते हुए सूर्य को ही देखें । (नः जरिमा द्युभिः सु हितः अस्तु) हमारी वृद्धावस्था दीप्तियों से युक्त मंगलमय हो । (निः ऋतिः) दुरवस्था (परातरम्) दूरतर (सु जिहीताम्) हट जाये ।

वृद्धावस्था जीवन की सर्वोच्च और उत्कृष्टतम अवस्था है । जिस प्रकार पूर्णिमा का पूर्ण चन्द्रमा सम्पूर्ण कलाओं से कलान्वित होता है, उसी प्रकार मानव की वृद्धावस्था सम्पूर्ण कलाओं से कलान्वित

होनी चाहिए । शीतलता अथवा शान्ति वृद्धावस्था की सब से बड़ी उपलब्धि है । मस्तिष्क को सदैव शीतल रखते हुए, उत्तेजनापूर्ण वातावरण में भी नितान्त शान्त एवं सुप्रसन्न रहना वृद्धावस्था की सुशोभन दीप्ति है ।

वृद्धावस्था मौत की प्रतीक्षा के लिए नहीं है. मृत्यु को परे धकेलते हुए, योगस्थ रहकर मोक्षसाधनारत और परोपकाररत रहने के लिए है । अपने जीवन के अमूल्य अनुभवों से सब को लाभान्वित करना, सब को सही परामर्श देना, सब की हितकामना करना, सब से प्रिय और मधुर वाणी बोलना तथा भटकती हुई मानव-प्रजाओं को सुपथ दर्शाने के लिए है ।

मन्त्र में वेदमाता उदय होते हुए सूर्य को देखने का उपदेश कर रही है कि वृद्धावस्था अस्तावस्था नही है, उदयावस्था है । जिस प्रकार उदय होता हुआ सूर्य अन्धकार को हटाकर प्रकाश का प्रसार करता है, उसी प्रकार वृद्धजन भी संसार के अज्ञान-अन्धकार को हटाकर मानव प्रजा को अमृत-पथ (वेदपथ) का दर्शन करायें । वृद्धजन मन्त्र की शिक्षाओं पर चिन्तन-मनन करके वृद्धावस्था के सदुपयोग, सम्मान एवं सौन्दर्य का निरन्तर संवर्धन करते रहें ।

समाजसेवी संस्थाएँ एवं सरकार मिलकर योजनाबद्ध रीति से इन अमूल्य हीरों (वृद्ध स्त्री/पुरुषों) से समाज, राष्ट्र एवं विश्व की अनेकों समस्याएँ निःशुल्क हल करा सकती हैं ।

अन्त में प्रभु से प्रार्थना है कि सभी को सफल मनोरथ बनायें, सुस्वास्थ्य के साथ शतायु बनायें ।

(धन्य-जीवन)

जीवन उन्हीं का धन्य है, जीते हैं जो सब के लिए ।
धिक्कार है उनके लिए, जीते हैं जो अपने लिए ॥
जन्म होना है सुजन का, विश्व के उद्धार को ।
विश्व सेवा, विश्वमंगल, विश्व के उपकार को ॥

(स्वा॰ विद्यानन्द-विदेह)

—कृष्णऔतार
बढ़ापुर (बिजनौर)

शास्त्रार्थों के मनोरञ्जक क्षण

१. यह आर्यसमाज का चमत्कार है !

भाष्याचार्य हरनामदत्त दो वर्ष तक महाविद्यालय ज्वालापुर में पढ़ाकर ऋषिकुल हरिद्वार में चले गए। आस्था से वे सनातनी तथा मूर्तिपूजक थे, किन्तु पूछने पर नरदेव शास्त्री जैसे आर्यसमाजियों को पौराणिक मत के खण्डन की युक्तियाँ बता देते थे। एक जगह शास्त्रार्थ में वे पौराणिक दल की ओर से आए। आर्यसमाज की ओर से महाविद्यालय के पण्डित पहुँचे थे। अच्छा महाभारत का-सा दृश्य रहा। भाष्याचार्यजी अपना बड़ा-सा पग्गड़ बाँधे सनातनी मंच पर बैठे-बैठे चुपचाप शास्त्रार्थ सुनते रहे। कभी-कभी मुस्कराने लगते। शास्त्रार्थ समाप्त होने पर दोनों पक्षों के लोग (ऋषिकुल हरिद्वार तथा महाविद्यालय ज्वालापुर के पण्डित) एक ही गाड़ी से हरिद्वार लौटे। समीप बैठे हुए थे पं० नरदेव शास्त्री से पं० हरनामदत्त ने कहा, "मुझे इस बात पर बड़ा आश्चर्य होता है कि आर्यसमाज के बेपढ़े उपदेशक भी इतना बोल कैसे लेते हैं?" पं० नरदेव का उत्तर था—"महाराज! आर्यसमाज में यही चमत्कार है!" भाष्यचार्य जी हँस पड़े।

['पं० नरदेव शास्त्री के संस्मरण']

२. गणित का आरम्भ कहाँ से?

"ईसाई और मुसलमान रूह और माद्दे (जीव तथा प्रकृति) की पैदायश तो मानते हैं, पर विनाश नहीं मानते।" श्री स्वामी दर्शनानन्दजी कह रहे थे कि—"जीव और प्रकृति अनादि और अनन्त हैं। जो अनादि है वह अनन्त भी है, तथा जो अनन्त है वह अनादि भी अवश्य है। एक किनारे का हाशिया नहीं होता।"

पादरी ज्वालासिंह ने कहा—"गणित का आरम्भ एक से होता है, पर अन्त कहीं नहीं होता।"

इसपर श्री स्वामी दर्शनानन्दजी ने कहा—"आप गणित नहीं जानते हैं। गणित का आरम्भ एक से नहीं होता है। एक से आगे जैसे दश, सौ, हजार, लाख, करोड़ आदि चलते हैं, उसी प्रकार पीछे को भी चलते हैं, जैसे एक बटा दस, एक बटा सौ, एक बटा हजार, एक बटा लाख, एक बटा करोड़ आदि—न इसका आदि है, न अन्त है।"

पादरी साहब हैरान रह गए। लोगों पर बहुत प्रभाव पड़ा।

३. मैं टेलीफ़ोन से शास्त्रार्थ करूँगा !

मौलवी सनाउल्ला आर्यसमाज के एक उत्सव पर शास्त्रार्थ करने के लिए जा रहे थे। इसी उत्सव पर ईसाइयों ने भी आर्यसमाज से शास्त्रार्थ करने की चुनौती दे रक्खी थी। एक ही स्टेशन से मौलवी साहब और एक अन्य पादरी साहब गाड़ी में सवार हुए। दोनों का एक-दूसरे से परिचय था, अतः दुआ-सलाम के बाद एक ही डिब्बे में दोनों बैठ गए। विशेष भीड़ भी नहीं थी, इसलिए आराम से मौलवी और पादरी बैठकर गपशप करने लगे।

पादरी ने मौलाना से कहा, "क्या करें? स्वामी दर्शनानन्द ने सबको तंग कर रक्खा है। जहाँ कहीं आर्यसमाज से शास्त्रार्थ होता है, स्वामी दर्शनानन्द तो पहले से ही तैयार मिलते हैं। अतः आर्यसमाज को सहज में ही विजय मिल जाती है।" उन्होंने सनाउल्ला साहब से कोई उपाय तलाश करने के लिए कहा ताकि स्वामीजी से पार पाया जा सकें।

मौलाना ने कहा, "उपाय क्या करें? सब स्थानों पर स्वामी दर्शनानन्द पहुँच जाते हैं और उनके सामने हमारी दाल गलती ही नहीं !"

तब दोनों ने आपस में सोच-विचारकर एक योजना बनाई। क्यों न एक ही दिन भिन्न-भिन्न स्थानों के ईसाई पादरी और मुसलमान मौलवी आर्यसमाज को शास्त्रार्थ के लिए चैलेंज करें? स्वामी दर्शनानन्द तो अधिक-से-अधिक एक ही जगह जा सकेंगे; अन्य स्थानों पर आर्यसमाज के जो पण्डित आएँगे, वे स्वामीजी के बराबर योग्यतावाले नहीं होंगे और वहां हमारी विजय सुनिश्चित हो जाएगी।" इस योजना की सफलता की बात सोचते-सोचते मौलवी और पादरी फूलकर कुप्पा हो गए।

दोनों इस प्रकार चर्चा कर ही रहे थे कि पास की सीट पर चादर ओढ़े सोया यात्री अचानक उठ पड़ा और बोला—"मौलवी साहब! आप अफ़सोस न करें, मैं एक ही स्थान पर बैठा हुआ टेलिफ़ोन से आप सब पादरी साहबान तथा मौलानाओं से शास्त्रार्थ कर लूँगा। बारी-बारी से टेलिफ़ोन पर बैठकर सभी से निपट लूँगा।"

जब सनाउल्ला ने इस यात्री को ध्यान से देखा तो पता चला कि ये तो स्वामी दर्शनानन्द ही हैं! अब वे बोल पड़े, "स्वामीजी! हमें पता नहीं था कि आप हमारे ही डिब्बे में हैं। हमने तो देखा कोई यात्री सोया है। आप तो कहीं भी हमारा पीछा नहीं छोड़ते। हमें क्या पता था कि आप यहाँ भी विराजमान हैं और हमारी बातें सुन रहे हैं !"

इसपर स्वामी दर्शनानन्दजी का उत्तर सुनने योग्य था—"मौलाना साहब! हम सोनेवाले कहाँ? हम तो सोतों को जगाते हैं! हमारे ऋषि दयानन्द ने तो शिवरात्रि की रात को सचाई जानने के लिए अपने बाप को भी सोते से जगा दिया था! जागते रहना, और दूसरों को जगाना—यही तो हमारा काम है! हम न सोते हैं और न दूसरों को सोने देते हैं !"

मौलाना तथा पादरी साहब का चेहरा देखने लायक था।

['स्वामी दर्शनान्द' : राजेंद्र जिज्ञासु]

४. स्वामी दर्शनानन्द की शास्त्रार्थ-तत्परता

घटना मुरादाबाद ज़िला के कस्बा सम्भल की है। स्वामी दर्शनानन्द जब एक बार उस समाज के उत्सव पर गए तो दो अनुभवहीन युवा अधिकारियों की बेसमझी के आचरण से उन्हें नाराज़गी हुई। जब उन युवाओं पर स्वामीजी की सीख का भी कोई असर नहीं हुआ तो वीतराग संन्यासी ने स्पष्ट कहा, "आगे से वे उनके उत्सव पर हरगिज़ नहीं आएँगे, यदि वे लोग अपने आचरण और व्यवहार को नहीं सुधारते।" सम्भल में मुसलमानों का बाहुल्य है और प्रायः आर्यसमाजी विद्वानों से उनके मौलवियों के शास्त्रार्थ होते ही रहते थे।

अगले ही वर्ष मौलवियों को यह भनक पड़ गई कि किसी कारण से खिन्नमना स्वामीजी इस बार आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव में नहीं आएँगे। उन्होंने इस स्थिति का फ़ायदा उठाकर आर्यसमाज को शास्त्रार्थ के लिए चुनौती दे दी। समाज का उत्सव आरम्भ हुआ। समाज के अनुभवी और वयोवृद्ध प्रधान ने उन युवकों को कहा, "देखो, तुम्हारे ही अव्यावहारिक आचरण का परिणाम आज आर्यसमाज को भुगतना पड़ रहा है। यदि स्वामीजी नहीं आते हैं तो इन मौलवियों का मुकाबला क्या तुम खुद करोगे?"

पश्चात्ताप के स्वर में इन युवाओं ने अपनी ग़लती मानी और स्वामीजी को उत्सव में आने का निमंत्रण भेजा गया। किन्तु स्वामीजी की ओर से कोई उत्तर नहीं आया। शायद उनकी खिन्नता दूर नहीं हुई थी।

तथापि, स्वामीजी को ध्यान आया कि इन्हीं दिनों में सम्भल का उत्सव होता है और मौलवी लोग आर्यसमाज को प्रायः शास्त्रार्थ के लिए भी ललकारते हैं। उन्होंने गुरुकुल के पते पर आई डाक देखनेवाले अध्यापक से पूछा—"क्या सम्भल से कोई पत्र आया था?"

उन्हें उत्तर मिला, "पत्र तो आया था, किन्तु वहाँ के अधिकारियों के अशोभनीय आचरण की प्रतिक्रिया के कारण उत्सव में जाने का स्वीकृतिसूचक उत्तर नहीं भेजा गया।"

अब तक संन्यासी का मन पुनः प्रशान्त स्थिति में आ चुका था। उन्होंने उत्तर में कहा, "वह बात तो ठीक है, किन्तु यहाँ तो आर्यसमाज की प्रतिष्ठा का प्रश्न है। यदि शास्त्रार्थ के समय आर्यसमाज का मंच खाली रहा तो भद्द किसकी होगी?" यह कहकर और मन में कुछ निश्चय कर स्वामीजी सम्भल के लिए चल पड़े।

जब उत्सव-स्थल पर पहुँचे, तब तक सभा की कार्यवाही आरम्भ हो चुकी थी। बिना किसी अधिकारी को अपने आने की सूचना दिये, कम्बल ओढ़े स्वामीजी श्रोताओं की अन्तिम पंक्ति में दरी पर चुपचाप बैठ गए। इधर उनका बैठना हुआ और उधर आर्य-मंच को स्वामी दर्शनानन्द से शून्य पाकर सम्भल के मौलवियों ने आर्यसमाज को शास्त्रार्थ के लिए ललकार दिया। इस्लाम का प्रवक्ता बोल पड़ा—"किसी में दम है तो आकर हमसे मुबाहिसा करो!"

पण्डाल में सन्नाट छा गया !

किन्तु उपस्थित लोगों ने आश्चर्यभरी नज़रों से देखा कि दरी से उठकर स्वामी दर्शनानन्द ने अपना कम्बल उतार दिया और कहा—"आइये, सत्यासत्य के निर्णय के लिए आर्यसमाज सदा तैयार रहता है ! दर्शनानन्द आपकी ख़िदमत के लिए हाज़िर है !"

उस समय मौलवियों पर घड़ों पानी पड़ गया और वे बचाव की तरकीबें सोचने लगे। ['स्वामी दर्शनानन्द'—राजेंद्र जिज्ञासु]

५. मैं प्रत्येक बात न्यायपूर्वक करता हूँ

स्वामी दर्शनानन्द जी का पादरी ज्वालासिंह से शास्त्रार्थ हो रहा था। स्वामीजी कह रहे थे—"लक्षणप्रमाणाभ्यां वस्तुसिद्धिः, न तु प्रतिज्ञामात्रेण।—वस्तु की सिद्धि लक्षण और प्रमाणों से होती है, केवल प्रतिज्ञा करने से नहीं ! आप अपनी बात लक्षण और प्रमाणपूर्वक कहिये !"

पादरी साहब झुँझलाकर बोले, "स्वामीजी ! आप तो हर बात न्याय में ले जाते हैं !"

इसपर स्वामीजी ने उत्तर दिया—"मैं हर बात न्यायानुकूल करता हूँ। आपको न्याय पसन्द नहीं है, तो आप अन्यायानुकूल कहें !"

इसपर पादरी साहब चुप्पी साध गए।

६. आर्यसमाज के नियमों का सनातनी पण्डित पर जादू

१९०८ का वर्ष। टोहाना (हरियाणा) में आर्यसमाज तथा पौराणिक विद्वानों के बीच एक शास्त्रार्थ हुआ। आर्यसमाज के प्रतिनिधि पं० राजाराम ने प्रतिद्वन्द्वी पं० लक्ष्मीनारायण से पूछा—"शास्त्रार्थ किस विषय पर होगा ?"

उत्तर था—"आर्यसमाज के नियमों पर।"

इसपर पं० राजाराम ने कहा—"आर्यसमाज के नियम तो आप भी मानते हैं। शास्त्रार्थ तो मतभेदवाले तथा विवादास्पद विषयों पर होता है।"

किन्तु पं० लक्ष्मीनारायण अपनी ज़िद पर अड़े रहे—"शास्त्रार्थ तो आर्यसमाज के नियमों पर ही होगा।" साथ ही यह भी कहा—"हम आपका एक भी नियम नहीं मानते।"

पं० राजाराम ने पौराणिक प्रधान से पूछा—"क्यों आप हमारा एक भी नियम नहीं मानते ?"

प्रधान ने भी वही उत्तर दिया—"इसलिए कि हम आर्यसमाज के नियमों में विश्वास नहीं रखते।"

पं० राजाराम ने कहा—"आप अपनी इस बात को लिखकर दे दें।"

पौराणिक पक्ष को भला क्या इन्कार था ! उन्होंने लिख दिया और सभा में पं०

राजाराम ने पढ़कर सुना दिया कि सनातनी पक्ष आर्यसमाज का एक भी नियम नहीं मानता। अब पं० राजाराम ने ऊँचे स्वर में कहना आरम्भ किया—"आर्यसमाज का नियम है वेदों का पढ़ना और पढ़ाना। किन्तु पौराणिक तो हमारे किसी भी नियम को मानने से इन्कार करते हैं। अतः उनका नियम हुआ—न वेद को पढ़ना और न पढ़ाना। न वेद को सुनना और न सुनाना। इसी प्रकार आर्यसमाज का नियम है सत्य को ग्रहण करना और असत्य को त्यागना। किन्तु सनातनी तो आर्यसमाज के नियमों को मानने से इन्कार कर चुके हैं। अतः वे तो असत्य को ग्रहण करना ही अपना धर्म मानेंगे।"

पं० राजाराम के इस कथन पर सनातनी पक्ष वाले अपना-सा मुँह लेकर रह गए।

[पं० मनसाराम वैदिक तोप की जीवनी : प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु]

७. आर्यसमाज ने दो उल्लू पाले

यह शास्त्रार्थ गुरुकुल सिकन्दराबाद के आचार्य पं० मुरारीलाल तथा सनातनी विद्वान् पं० अखिलानन्द के बीच हो रहा था। अखिलानन्द वर्षों तक आर्यसमाज में रह चुका था, किन्तु स्वार्थवश वह सनातनी शिविर में चला गया था। उसने स्वामी दयानन्द के यजुर्वेद-भाष्य से एक सूत्र पकड़कर कहा—"स्वामीजी ने यजुर्वेद के अमुक मंत्र का अर्थ करते हुए लिखा है कि लोगों को चाहिए कि वे उल्लू पालें। बताओ, आर्यसमाज ने अपने गुरु का आदेश पालते हुए कितने उल्लू पाले हैं?"

पं० मुरारीलाल अखिलानन्द की धूर्तता को समझ गए। वे उसके इस कुतर्क का मुँहतोड़ उत्तर देना चाहते थे। उन्होंने कहा—"हाँ, आर्यसमाज ने दो उल्लू पाले।"

अब तो अखिलानन्द चौंक पड़ा।

अपनी बात का स्पष्टीकरण करते हुए पं० मुरारीलाल बोले—"देखो, पं० भीमसेन शर्मा और पं० अखिलानन्द शर्मा रूपी दो उल्लुओं को आर्यसमाज ने प्रश्रम दिया, सम्मान दिया, किन्तु ये दोनों वास्तव में उल्लू ही सिद्ध हुए। इसलिए उपयोगी न समझकर हमने उन्हें भगा दिया। अब ये उल्लू सनातन धर्म की शोभा बढ़ा रहे हैं!"

अखिलानन्द की शक्ल देखने लायक थी!

८. पं० गणपति और पादरी जॉनसन

एक बार पं० गणपति शर्मा कश्मीर गए हुए थे। उसी अवसर पर प्रसिद्ध पादरी जॉनसन भी, जिसे अपने संस्कृत-ज्ञान पर गर्व था, श्रीनगर आया हुआ था। उसने कश्मीरी पण्डितों को वेदान्त पर शास्त्रार्थ करने के लिए ललकारा। कश्मीर, जो एक समय कैयट, वज्रट, रुद्रट, मम्मट तथा कल्हण, जल्हण एवं बिल्हण जैसे पण्डितों के कारण 'शारदा देश' की संज्ञा प्राप्त कर चुका था, संस्कृत-विद्या की दृष्टि से सर्वथा पिछड़ चुका था। मुस्लिम संस्कारयुक्त तथा मांसादि का आहार करनेवाले बेचारे कौल, काटजू, काक, कुंजरू, किचलू जैसे मात्र नामधारी पण्डितों से यह आशा कैसे की जा सकती थी कि वे

उस अंग्रेज पादरी से शास्त्रार्थ करने के लिए सामने आते जो शास्त्रों का अच्छा जानकार होने के साथ-साथ धाराप्रवाह संस्कृत सम्भाषण भी करता था। उसने काशी, काञ्ची, तथा कुम्भकोणम् जैसे स्थानों के पण्डितों को शास्त्रार्थ के लिए आहूत किया था। कुम्भकोणम् में उसे स्थानीय पण्डितों ने अवश्य परास्त किया था, जबकि वे त्रिविधार्थ देनेवाली शब्दावली का प्रयोग कर उसे उलझा सके थे। शेष स्थानों पर तो पादरी का ही पलड़ा भारी रहा था।

जब कश्मीरी पण्डितों का पादरी के सामने आने का साहस नहीं हुआ, तब महाराजा प्रतापसिंह बड़े चिन्तित हुए और सोचने लगे कि क्या कश्मीर की नाक कट जाएगी और उन्हें पादरी को दिग्विजयी होने का प्रमाणपत्र देना पड़ेगा? क्योंकि जॉनसन ने उन्हें कह दिया था कि या तो पण्डित उसे शास्त्रार्थ में पराजित करें या फिर उसे विजयपत्र दिया जावे।

इसी स्थिति में किसी ने कश्मीर-नरेश को जानकारी दी कि इस समय आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् पं० गणपति राजधानी में आए हुए हैं और 'आर्यसमाज हजूरी बाग' में ठहरे हुए हैं। यदि उन्हें बुलाया जाए तो वे पादरी के समर्थ प्रतिद्वन्द्वी सिद्ध होंगे।

किसी सनातनी पण्डित ने कहा—"महाराज! पं० गणपति तो कट्टर आर्यसमाजी हैं।"

महाराजा ने इस आपत्ति को अस्वीकार कर दिया और गणपति जी को शास्त्रार्थ के लिए आमंत्रित किया गया। दोनों महारथियों का जिस प्रकार साम्मुख्य हुआ, उसका विवरण पं० नरदेव शास्त्री ने इस प्रकार दिया है—

जॉनसन— हम आपसे शास्त्रार्थ करने आए हैं।

गणपति शर्मा—पहले यह बताइए कि शास्त्रार्थ शब्द के क्या अर्थ हैं? क्या शास्त्र से आपका मतलब छः शास्त्रों से है और क्या आपको यह भी ज्ञात है कि 'अर्थ' शब्द के भी अनेक अर्थ हैं? अर्थ अर्थात् धन, अर्थ अर्थात् प्रयोजन, .क अर्थ पुरुषार्थ-चतुष्टय में भी परिगणित हुआ है, और शास्त्र भी कई हैं—धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, नीतिशास्त्र, दर्शनशास्त्र आदि . आप बताएँ कि आप किस शास्त्र का अर्थ करने आए हैं?

जॉनसन— (हतप्रभ होकर)—हम इसका उत्तर नहीं दे सकेंगे।

महाराजा प्रतापसिंह ने इसपर कहा—पादरी साहब! उत्तर दीजिए।

किन्तु जॉनसन ने तो सर्वथा मौन ही साध ही लिया और नरेश ने पं० गणपति शर्मा को विजयी घोषित कर दिया। किन्तु उनसे रहा नहीं गया और वे पण्डितजी से पूछ बैठे—"क्या आप सचमुच आर्यसमाजी हैं?"

शायद महाराजा यह सोचते थे कि मेरे पूछने पर संकोचवश पं० गणपति अपने को आर्यसमाजी कहने से इन्कार कर देंगे। किन्तु पं० गणपति का उत्तर स्पष्ट था—"हाँ महाराज, मैं तो आर्यसमाजी हूँ।"

इसपर किञ्चित् क्षोभ प्रकट करते हुए कश्मीर-नरेश बोल पड़े—"बस, यही खराबी है। आप-जैसे पण्डित को तो सनातनियों में होना चाहिए था।" फिर भी कृतज्ञता प्रकट करते हुए महाराजा ने कहा—"आज आपने कश्मीर की प्रतिष्ठा को बचा लिया!"

९. पं० गणपति शर्मा का कोटा-शास्त्रार्थ

२५ सितम्बर १९०४ को कोटा के रामपुरा बाजार में सेठ कुँवरलाल के नोहरे की छत पर सनातन धर्म और आर्यसमाज के बीच शास्त्रार्थ समारम्भ हुआ। आर्यसमाज ने पं० शिवशंकर शर्मा काव्यतीर्थ तथा पं० गणपति दोनों को आमंत्रित किया था। काव्यतीर्थजी भव्य आकृति तथा गौरवर्ण के थे, जबकि पं० गणपति श्यामवर्ण तथा अनाकर्षक मुखाकृति वाले। साधारण जनता ने पं० शिवशंकर को मुख्य पण्डित और पं० गणपति को उनका साधारण सेवक ही समझा। शास्त्रार्थ का विषय था मृतक-श्राद्ध और सनातन धर्म का पक्ष-समर्थन करनेवाले थे पं० आत्मानन्द और पं० लक्ष्मीदत्त शर्मा।

शास्त्रार्थ आरम्भ हुआ तो पं० गणपति की एक दो उक्तियों-प्रत्युक्तियों ने ही विपक्षी पण्डितों को मौन कर दिया और वे पराजित-भाव से सभा-स्थान से उठकर चले गए।

दर्शक चकित थे कि जिसे नौकर समझा जाता था, वही बाज़ी मार ले गया!

१०. झालावाड़-शास्त्रार्थ और पं० गणपति शर्मा

यह शास्त्रार्थ १९०६ के जनवरी मास में हुआ। झलावाड़-नरेश महाराजा भवानी सिंह के नाना महाराज बलभद्रसिंह मध्यस्थ के रूप में आमंत्रित किये गए। सनातन धर्म के पक्ष को प्रस्तुत करन का दायित्व पं० जयदेव झा मीमांसाचार्य पर आया। झा जी नव्य मीमांसक होने के नाते स्वयं को अनीश्वरवादी मानते थे, जबकि पं० गणपति ने अपने पूर्व-दिन के व्याख्यान में ईश्वर के अस्तित्व को प्रमाण-पुरस्सर प्रतिपादित किया था।

जयदेव झा ने पं० गणपति जी की ईश्वर-विषयक युक्तियों का ही प्रत्याख्यान किया, किन्तु इसमें उन्हें सफलता नहीं मिली। ततपश्चात् सनातन धर्म सभा के मंत्री पं० गोपालहरि स्वपक्ष-स्थापना के लिए कटिबद्ध हुए, किन्तु वे तो एक-दो तर्क-वितर्क में ही लड़खड़ा गए और शास्त्रार्थ करने में अपनी अक्षमता स्वीकार कर ली। तब पं० जयदेव झा पुनः सामने आए और गर्वपूर्वक कहने लगे कि 'यदि कल पुनः शास्त्रार्थ होगा तो मैं पं० गणपति शर्मा के कथन का प्रत्यक्षर खण्डन करूँगा।'

उनके इस कथन पर पं० गणपति ने प्रतिपक्षी को अप्रतिभ करते हुए जो उत्तर दिया, वह स्मरणीय है—"शास्त्रार्थ में जय-पराजय का कोई प्रश्न नहीं होता। शास्त्रार्थ का उद्देश्य तो शास्त्र-सिद्धान्त में परस्पर प्रीतिपूर्वक विचार-विनिमय करते हुए किसी

निश्चय पर पहुँचना होता है। तथापि पं० जयदेव झा ने जो यह कहा कि वे मेरे कथन का प्रत्यक्षर खण्डन करेंगे, उनका यह कथन असमंजसपूर्ण है। मान लीजिए, किसी प्रसंग में मैं यह कह देता हूँ कि पं० जयदेव जी अपने माता-पिता की औरस सन्तान हैं, तो क्या पण्डितजी मेरे इस कथन का प्रतिवाद कर यह कहेंगे कि नहीं, मैं अपने माता-पिता की सन्तान कदापि नहीं हूँ? यदि ऐसा वे कहते हैं तो बड़ी दुःखद परिस्थिति उत्पन्न होगी। परमात्मा न करे कि वे मेरे कथन का प्रत्यक्षर खण्डन करें।"

इस उत्तर ने तो लोगों में हँसी की लहर उत्पन्न कर दी। पं० जयदेव बुरी तरह झेंप में उठकर चले गए।

उन्होंने बाद में कभी अपने किसी मित्र के समक्ष स्वीकार किया था कि "लज्जा के मारे लगभग छः मास तक तो मैं घर के बाहर ही नहीं निकला!"

११. पं० गणपति शर्मा और महामहोपाध्याय पं० शिवकुमार

एक बार पं० गणपति शर्मा स्वामी दयानन्द के आद्यशिष्य तथा अपूर्व वैयाकरण पं० ज्वालादत्त शर्मा को साथ लेकर पं० शिवकुमार शास्त्री से भेंट करने काशी गए। पता चला कि शास्त्रीजी अपने पैतृक गाँव उन्दी में हैं जो चार-पाँच कोस की दूरी पर ही है। अब ये दोनों विद्वान् उक्त गाँव में जा पहुँचे। शास्त्रीजी ने दोनों का स्वागत किया और आने का कारण पूछा। उत्तर में पं० गणपति जी बोले कि शास्त्रीय वार्तालाप के लिए ही वे आए हैं।

पं० शिवकुमार ने एतदर्थ अपनी सहमति तो प्रकट की, किन्तु प्रतिप्रश्न करते हुए पूछ लिया कि वे किन विषयों पर वार्तालाप करना चाहेंगे?

प्रतिवादि-भयंकर पं० गणपति ने चट उत्तर दिया, "यद्यपि सनातन धर्मी और आर्यसमाजी, दोनों ही वेदानुयायी हैं, किन्तु मूर्तिपूजा और श्राद्धविधान में दोनों के मतभेद स्पष्ट हैं। इन्हीं विषयों पर चर्चा होनी चाहिए।"

इसपर पं० शिवकुमार ने उपर्युक्त विषयों पर शास्त्रालाप करने से इन्कार करते हुए कोई अन्य विषय लेने के लिए कहा। पं० गणपति शर्मा ने वयोवृद्ध विद्वान् के प्रति सम्मान प्रदर्शित करते हुए कहा कि आपसे विद्वत्ता के विषय में हमारी कोई स्पर्धा नहीं है, हम तो मतभेद के विषयों पर ही चर्चा करने के लिए आए हैं। जब पं० शिवकुमार मूर्तिपूजादि विषयों पर चर्चा करने के लिए तैयार नहीं हुए तो दोनों आर्य विद्वान् काशी लौट आए। उन्होंने अनुभव किया कि सनातनी पक्ष की निर्बलता उक्त प्रसंग से सिद्ध हो जाती है।

— **बिखरे मोती से** लेखक : **डॉ० भवानीलाल भारतीय**

हमारे प्रकाशन

महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती

आनन्द गायत्री कथा	१४.००
एक ही रास्ता	१२.००
शंकर और दयानन्द	८.००
मानव जीवन-गाथा	१३.००
सत्यनारायण व्रत कथा	६.००
भक्त और भगवान	१२.००
उपनिषदों का सन्देश	१८.००
घोर घने जंगल में	२२.००
मानव और मानवता	३२.००
प्रभु मिलन की राह	२०.००
यह धन किसका है ?	२२.००
बोध-कथाएँ	१८.००
दो रास्ते	१७.००
दुनिया में रहना किस तरह	१७.००
तत्त्वज्ञान	२२.००
प्रभु-दर्शन	१७.००
प्रभु-भक्ति	१२.००
महामन्त्र	१४.००
सुखी गृहस्थ	७.००
त्यागमयी देवियाँ	९.००

MAHATMA ANAND SWAMI

Anand Gayatri Katha	30.00
The Only Way	30.00
Bodh Kathayen	40.00
How To Lead Life?	30.00

महर्षि दयानन्द

व्यवहारभानु	४.००
स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश	१.५०
आर्योद्देश्यरत्नमाला	१.५०
पंचमहायज्ञ विधिः	८.००

स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

सत्यार्थ प्रकाश	१२५.००
महाभारतम् (तीन खण्ड)	६००.००
वाल्मीकि रामायण	१७५.००
षड्दर्शनम्	१५०.००
चाणक्यनीति दर्पण	६०.००
विदुरनीतिः (हिन्दी-संस्कृत-अंग्रेजी)	४०.००
ब्रह्मचर्य गौरव	९.००
विद्यार्थियों की दिनचर्या	९.००
कुछ करो कुछ बनो	१४.००
मर्यादा पुरुषोत्तम राम	१२.००
आदर्श परिवार	१५.००
दयानन्द सूक्ति और सुभाषित	२५.००
वैदिक विवाह पद्धति	८.००
ऋग्वेद सूक्ति सुधा	२५.००
अथर्ववेद सूक्ति सुधा	१५.००
सामवेद सूक्ति सुधा	१२.००
ऋग्वेद शतकम्	१०.००
यजुर्वेद शतकम्	१०.००
सामवेद शतकम्	१०.००
अथर्ववेद शतकम्	१०.००
भक्ति संगीत शतकम्	६.००
चमत्कारी औषधियाँ	१५.००
घरेलू औषधियाँ	१५.००
चतुर्वेद शतकम् (सजिल्द)	५०.००
स्वर्ण पथ	१४.००
प्रभात-वन्दन	८.००
प्रार्थना-प्रकाश	८.००
शिवसंकल्प	८.००
प्रार्थना लोक (सजिल्द)	४०.००
वेद सौरभ	१२.००

आचार्य उदयवीर शास्त्री

न्यायदर्शन भाष्य	१५०.००
वैशेपिकदर्शन भाष्य	१५०.००
सांख्यदर्शन भाष्य	१२५.००
योगदर्शन भाष्य	१००.००
वेदान्तदर्शन भाष्य (ब्रह्मसूत्र)	१८०.००
मीमांसादर्शन का विद्योदय भाष्य	३५०.००
सांख्यदर्शन का इतिहास	२५०.००
सांख्य सिद्धान्त	२००.००
वेदान्तदर्शन का इतिहास	२००.००
प्राचीन सांख्य सन्दर्भ	१००.००
वीर तरंगिणी (लेखों का संग्रह)	२५०.००

स्वामी विद्यानन्द सरस्वती

दीप्तिः	८०.००
आदि शंकराचार्य वेदान्ती नहीं थे	४०.००
सृष्टि विज्ञान और विकासवाद	४०.००
वेद मीमांसा	प्रेस में

पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय

शतपथ ब्राह्मण (तीन खण्ड)	प्रेस में
सन्ध्या : क्या, क्यों, कैसे	१५.००
विवाह और विवाहित जीवन	१८.००
जीवात्मा	४०.००

प्रो. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

ब्रह्मचर्य सन्देश	२५.००
वैदिक विचारधारा का वैज्ञानिक आधार	१५०.००

प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु

वैदिक ज्ञान-धारा	८०.००
महात्मा हंसराज	६०.००
महात्मा हंसराज ग्रन्थावली (४ खण्ड)	२४०.००
आर्य सूक्ति सुधा	१२.००

प्रो. नित्यानन्द पटेल

पूर्व और पश्चिम	३५.००
सन्ध्या विनय	६.००

डॉ. भवानीलाल भारतीय

बिखरे मोती	४०.००
कल्याण मार्ग का पथिक	प्रेस में
स्वामी श्रद्धानन्द ग्रन्थावली (११ खण्डों में)	६६०.००
आर्य समाज के बीस बलिदानी	१५..००
श्याम जी कृष्ण वर्मा	२४.००
आर्य समाज विषयक साहित्य परिचय	२५.००

स्वामी वेदानन्द सरस्वती

ऋषि बोध कथा	१०.००
वैदिक धर्म	२५.००

सुरेशचन्द्र वेदालंकार

ईश्वर का स्वरूप	प्रेस में
सहेलियों की वार्ता	२०.००

लेः देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय

अनुः पं. घासीराम

महर्षि दयानन्द चरित	२५०.००

क्षितीश वेदालंकार

चयनिका	१२५.००

पं. रामनाथ वेदालंकार

वैदिक मधुवृष्टि	६०.००

आ. प्रियव्रत वेदवाचस्पति

वेदोद्यान के चुने हुए फूल	५०.००

पं. चन्द्रभानु सिद्धान्ताभूषण

महाभारत सूक्ति सुधा	४०.००

डॉ. प्रशान्त वेदालंकार

धर्म का स्वरूप	५०.००

पं. विश्वनाथ विद्यालंकार

सन्ध्या रहस्य	२५.००

प्रो. रामविचार एम.ए.

आर्य समाज का कायाकल्प कैसे हो ?	४.००

पं. नन्दलाल वानप्रस्थी

गीत सागर	२५.००

आ. उदयवीर शास्त्री

आचार्य शंकर का काल १०.००

पं. वीरसेन वेदश्रमी

याज्ञिक आचार संहिता ४५.००

नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

प्रेरक बोध कथाएँ १५.००

कवि कस्तूरचन्द

ओंकार गायत्री शतकम् ३.००

पं. सत्यपाल विद्यालंकार

श्रीमद्भगवद्गीता १५.००

WORKS OF SVAMI SATYA PRAKASH SARASVATI

Founders of Sciences in Ancient India (Two Vols.) 800.00

Coinage in Ancient India (Two Vols.) 600.00

Geometry in Ancient India 350.00

Brahmgupta and His Works 350.00

God and His Divine Love 5.00

The Critical, Cultural Study of Satapath Brahman In Press

Speeches, Writings and Addresses

Vol.I : VINCITVERITAS 150.00

Vol.II : ARYA SAMAJ : A RENAISSANCE 150.00

Vol.III : DAYANAND : A PHILOSOPHER 150.00

Vol. IV : THREE LIFE HAZARDS 150.00

कर्म काण्ड की पुस्तकें

आर्य सत्संग गुटका ४.००

पंचयज्ञ प्रकाशिका ८.००

वैदिक संध्या १.००

सामाजिक पद्धतियाँ (मदनजीत आर्य) १२.००

संध्या-हवन-दर्पण (उर्दू) ८.००

Vedic Prayer in press

पं. वा. विष्णुदयाल (मॉरीशस)

वेद भगवान बोले १५.००

जीवनी

महात्मा आनन्द स्वामी (उर्दू) १०.००

महात्मा आनन्द स्वामी (हिन्दी) २५.००

त्रिलोकचन्द विशारद

महर्षि दयानन्द ५.००

गुरु विरजानन्द ५.००

स्वामी श्रद्धानन्द ५.००

धर्मवीर पं. लेखराम ५.००

मुनिवर पं. गुरुदत्त ५.००

स्वामी दर्शनानन्द ५.००

प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

महात्मा हंसराज ४.५०

स्वामी स्वतन्त्रानन्द ४.५०

महात्मा नारायण स्वामी ५.५०

देवतास्वरूप भाई परमानन्द ५.५०

सुनील शर्मा

हमारे बालनायक ८.००

देश के दुलारे ९.००

हमारे कर्णधार ८.००

गिरती दीवारें १२.००

नीरू शर्मा

आदर्श महिलाएँ ८.००

पहली हार पहली जीत १२.००

स्वामी दर्शनानन्द

कथा पच्चीसी ९.००

बाल शिक्षा २.५०

हरिशचन्द्र विद्यालंकार

दयानन्द चित्रावली	२५.००

ब्र. नन्दकिशोर

आचार्य गौरव	५.००

पं. नारायण स्वामी

प्राणायाम विधि	२.५०

सत्यभूषण वेदालंकार एम.ए.

नैतिक शिक्षा—प्रथम	२.५०
नैतिक शिक्षा—द्वितीय	३.००
नैतिक शिक्षा—तृतीय	४.५०
नैतिक शिक्षा—चतुर्थ	५.००
नैतिक शिक्षा—पंचम	५.००
नैतिक शिक्षा—षष्ठ	६.००
नैतिक शिक्षा—सप्तम	६.००
नैतिक शिक्षा—अष्टम	६.००
नैतिक शिक्षा—नवम	९.००
नैतिक शिक्षा—दशम	९.००

डॉ. मनोहर लाल

जीने का सही ढंग (प्रेरक बोध कथाएं)	१२.००

चित्र

स्वामी दयानन्द १६" X २२" बहुरंगी	४.००
स्वामी दयानन्द (कुर्सी) १८" X २२"	३.००
स्वामी दयानन्द (आसन) १८" X २२"	३.००
स्वामी श्रद्धानन्द १८" X २२" एक रंग	३.००
गुरु विरजानन्द १८" X २२" एक रंग	३.००
पण्डित लेखराम १८" X २२" एक रंग	३.००
स्वामी दर्शनानन्द १८" X २२" एक रंग	३.००
गुरुदत्त विद्यार्थी १८" X २२" एक रंग	३.००
महात्मा हंसराज १८" X २२" एक रंग	३.००

कैलेण्डर १९९६

महर्षि दयानन्द का झण्डे वाला बहुरंगी चित्र	४.००

(३००.०० रु० सैकड़ा)

जब प्रकृति की अनमोल दवाइयाँ आपको उपलब्ध हों तो पुड़िया आदि की क्या जरूरत है।

घर का वैद्य—प्याज	७.००
घर का वैद्य—लहसुन	७.००
घर का वैद्य—गन्ना	७.००
घर का वैद्य—नीम	७.००
घर का वैद्य—सिरस	७.००
घर का वैद्य—तुलसी	७.००
घर का वैद्य—आँवला	७.००
घर का वैद्य—नींबू	७.००
घर का वैद्य—पीपल	७.००
घर का वैद्य—आक	७.००
घर का वैद्य—गाजर	७.००
घर का वैद्य—मूली	७.००
घर का वैद्य—अदरक	७.००
घर का वैद्य—हल्दी	७.००
घर का वैद्य—बरगद	७.००
घर का वैद्य—दूध-घी	७.००
घर का वैद्य—दही-मट्ठा	७.००
घर का वैद्य—हींग	७.००
घर का वैद्य—नमक	७.००
घर का वैद्य—बेल	७.००
घर का वैद्य—शहद	७.००
घर का वैद्य—फिटकरी	७.००
घर का वैद्य—साग-भाजी	७.००
घर का वैद्य—अनाज	७.००
घर का वैद्य—फल-फूल	७.००
घर का वैद्य—धूप-पानी	१५.०

सभी छब्बीस पुस्तकें छः आकर्षक जिल्दों में भी उपलब्ध, कीमत ४५.०० रुपये प्रत्येक

घर का वैद्य (प्याज, लहसुन, गन्ना, नीम, सिरस)
घर का वैद्य (तुलसी, आँवला, नींबू, पीपल, आक)
घर का वैद्य (गाजर, मूली अदरक, हल्दी, बरगद)
घर का वैद्य (दूध-घी, दही-मट्ठा, हींग, नमक, बेल)
घर का वैद्य (शहद, अनाज, साग-भाजी, फल-फूल, फिटकरी)

घर का वैद्य—धूप-पानी	४०.००

अन्य प्रकाशन

डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार

आर्य समाज का इतिहास (भाग १)	३२५.००
आर्य समाज का इतिहास (भाग २)	३२५.००
आर्य समाज का इतिहास (भाग ३)	३२५.००
आर्य समाज का इतिहास (भाग ४)	३२५.००
आर्य समाज का इतिहास (भाग ५)	३२५.००
आर्य समाज का इतिहास (भाग ६)	३२५.००
आर्य समाज का इतिहास (भाग ७)	३२५.००
प्राचीन भारत इतिहास का वैदिक युग	५६.००
दक्षिणी-पूर्वी और दक्षिणी एशिया में भारतीय संस्कृति	५८.००
पूर्वी और दक्षिणी-पूर्वी एशिया का आधुनिक इतिहास	७७.००
प्राचीन भारत का धार्मिक सामाजिक और आर्थिक जीवन	७२.००
मध्य एशिया व चीन में भारतीय संस्कृति	५८.००
प्राचीन भारत	८०.००
भारतीय संस्कृति का विकास	७७.००
प्राचीन भारत की शासन संस्थाएँ और राजनीतिक विचार	५८.००
एशिया का आधुनिक इतिहास	१३०.००
यूरोप का इतिहास	१४०.००
समाजशास्त्र	८०.००
चाणक्य	६५.००
मौर्य साम्राज्य का इतिहास	१३५.००
भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन का इतिहास	५८.००
भारत का इतिहास	५५.००
विश्व की प्राचीन सभ्यताएँ	१७५.००
मध्यकालीन भारत	५८.००
प्राचीन भारत का सांस्कृतिक इतिहास	३२५.००
Political Thought of Swami Dayanand	150.00

डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

एकादशोपनिषद्	१२५.००
उपनिषद् प्रकाश	११०.००
श्रीमद्भगवद्गीता	१०५.००
संस्कार चन्द्रिका	१२०.००
बुढ़ापे से जवानी की ओर	९५.००
होमियोपैथिक चिकित्सा	१२५.००
होमियोपैथिक चित्रण	१२५.००
होमियोपैथी का क ख ग	१००.००
होमियोपैथी के मूल सिद्धान्त	८०.००
वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्व	४०.००
From old age to youth through Yoga	80.00
चतुर्वेद गंगालहरी	९५.००
मेरी नानी की कहानी	३५.००
माँ और बच्चा	२५.००

चूमपति एम.ए.

योगेश्वर कृष्ण	४०.००
वैदिक स्वर्ग	३०.००
वैदिक दर्शन	१५.००
अनादि तत्त्व	२५.००
विचार वाटिका (भाग दो)	१००.००

स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती

अग्निहोत्र सर्वस्व	१०.००
उपहार सर्वस्व	५.००
मृत्युञ्जय सर्वस्व	१०.००
स्वाध्याय सर्वस्व	१२.००
उपनयन सर्वस्व	१०.००
दो पुटन के बीच	८.००
ए लविंग टोकन	५.००

पं. शिवकुमार शास्त्री

श्रुति सौरभ	६०.००

डी. ए. वी. प्रकाशन

महर्षि दयानन्द और उनके अनुवर्ती	५०.००
सूक्तियाँ (हिन्दी-संस्कृत-अंग्रेजी)	४०.००
प्रेरक प्रवचन (महात्मा हंसराज)	३५.००
क्रान्तिकारी भाई परमानन्द	५०.००
महात्मा हंसराज (आनन्द स्वामी)	४८.००
Swami Daynand	35.00
Story of My Life (Lajpat Rai)	50.00
Mahatma Hansraj (Eng.)	35.00
Rishi Dayanand Saraswati	30.00
Reminiscences and Reflections of a Vedic Scholar (Prof. Satyavrat)	60.00
The Arya Samaj (Lajpat Rai)	50.00
Wisdom of the Vedas	35.00
Swami Dayanand through Non Arya Samajist Eyes	75.00
Chips from a Vedic Workshop	80.00
The Original Philosphy of Yoga	100.00

आयुर्वेद-स्वास्थ

चरक संहिता (दो भाग)	४५०.००
सुश्रुत संहित	१९८.००
आयुर्वेद नवनीत	६५.००
आयुर्वेद चिकित्सा सार	३०.००
आयुर्वेद की पेटेन्ट दवाईयाँ	६०.००
आयुर्वेद के चमत्कार	५०.००
योग के अद्भुत चमत्कार	३०.००
भोजन द्वारा चिकित्सा	५५.००
क्या खाएँ और क्यों	४०.००
चिकित्सा आलोक	५०.००
आरोग्य दर्पण	२५.००

शिवनारायण उपाध्याय

वैदिक राजनीतिशास्त्र	७५.००
वेदों की वैज्ञानिक अवधारणा	१००.००
वेद और पर्यावरण	२५.००

सभा के प्रकाशन

ऋग्वेद भाष्यम (पाँच भाग)	६२५.००
अथर्ववेद भाष्यम (दो भाग)	२७५.००
सामवेद भाष्यम (एक भाग)	९०.००
यजुर्वेद भाष्यम (एक भाग)	१२५.००
वैदिक संपत्ति	१२५.००
कुलियात आर्य मुसाफिर	२००.००
मृत्यु और परलोक	१६.००
योग रहस्य	१४.००
पं. रामचन्द्र देहलवी लेखावली	१८.००
आर्य पर्व पद्धति	१६.००
आर्य सिद्धान्त सागर	१२५.००
वैदिक यज्ञ दर्शन	६०.००
संगीत रत्न प्रकाश	५०.००
कर्त्तव्य दर्पण	१०.००
विद्यार्थी जीवन रहस्य	५.००
आर्य समाज क्या है	५.००
कल्याण मार्ग का पथिक	१५.००
स्वामी दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द	१२.००
श्री मद्दयानन्द प्रकाश (स्वामी सत्यानन्द)	४०.००
संस्कार चन्द्रिका (भीम सेन शर्मा)	१२५.००
आत्म दर्शन	१०.००
आर्य समाज का इतिहास (दो खण्ड)	१२५.००
What is Arya Smaj?	30.00
Journey of the Soul	35.00
Science in the Vedas	25.00
Rigveda (5 Vols.)	420.00
Atharveda (2 Vols.)	130.00
Samveda	65.00
Yajurveda	125.00
Introduction of the Veda	30.00
Sanskar Vidhi	35.00
Nine Upnishads	20.00

पुस्तक-परिचय

बिखरे मोती—लेखक : डा० भवानीलाल भारतीय। मूल्य ४०.०० रु०

ऋषि दयानन्द तथा आर्यसमाज के अनेक महापुरुषों के जीवन में घटित उन रोचक किन्तु शिक्षाप्रद घटनाओं का संकलन है जो विभिन्न स्रोतों से एकत्र की गई हैं। स्वामी दर्शनानन्द, पं० गणपति शर्मा, पं० धर्मभिक्षु, पं० रामचन्द्र देहलवी तथा अमर स्वामी आदि शास्त्रार्थ महारथियों के ३१ रोचक प्रसंगों के अतिरिक्त आर्यों की हाजिर जवाबी, साहित्यकारों के बहुरंगी जीवन की झांकियां, उपदेशकों के चुटकुले, कविगुरु रवीन्द्रनाथ, स्वामी विवेकानन्द, पं० नेहरू, जार्ज वर्नार्ड शा आदि विश्व ख्याति के पुरुषों के मार्मिक संस्करणों का यह अनुपम संग्रह है।

दीप्ति—लेखक : स्वामी विद्यानन्द सरस्वती। मूल्य ८०.०० रु०

ग्रन्थ में स्वामी विद्यानन्द जी के सुविवेचित, शास्त्र प्रमाणों, युक्तियों एवं तर्क से समन्वित १६ ऐसे निबन्धों का संग्रह है जिनमें शरीर में जीवात्मा का आवास, स्थावर (वृक्षों) में जीव विचार, कालाकाल मृत्यु सृष्टि संवत् आदि उन विषयों का विचार है जो आर्य विद्वानों में भी विवाद के कारण बने हुए हैं। इन निबन्धों में भावुकता, अतिवादिता तथा अतिशयोक्ति को सर्वथा एक ओर रखकर स्वामी जी ने एक सतर्क समीक्षक की बेबाकी के साथ इन विवादों को सुलझाया है। स्वाध्यायशील आर्यों के लिए यह पुस्तक एक सुन्दर उपहार है।

वैदिक ज्ञानधारा—सं० : प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु। मूल्य ८०.०० रु०

आर्यसमाज के विगत काल के अनेक मनस्वी लेखकों, चिन्तकों तथा विचारकों के द्वारा रचित साहित्य से आज के आर्य पाठक प्रायः अपरिचित ही हैं। आवश्यकता इस बात की है कि ऐसे विशिष्ट निबन्ध साहित्य को पुनः उपलब्ध कराया जाए। प्रा० जिज्ञासु द्वारा सम्पादित यह ग्रन्थ इसी प्रयास की एक कड़ी है। पूरा ग्रन्थ आध्यात्म, सिद्धान्त तथा इतिहास शीर्षक तीन खण्डों में विभक्त है और कुल ३८ निबन्ध इसमें सम्मिलित किए गए हैं।

प्राप्ति-स्थान :—

विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द

४४०८, नई सड़क, दिल्ली-६

फोन : २९१४६४५

अन्य प्रकाशन

डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार

आर्य समाज का इतिहास (भाग १)	३२५.००
आर्य समाज का इतिहास (भाग २)	३२५.००
आर्य समाज का इतिहास (भाग ३)	३२५.००
आर्य समाज का इतिहास (भाग ४)	३२५.००
आर्य समाज का इतिहास (भाग ५)	३२५.००
आर्य समाज का इतिहास (भाग ६)	३२५.००
आर्य समाज का इतिहास (भाग ७)	३२५.००
प्राचीन भारत इतिहास का वैदिक युग	५६.००
दक्षिणी-पूर्वी और दक्षिणी एशिया में भारतीय संस्कृति	५८.००
पूर्वी और दक्षिणी-पूर्वी एशिया का आधुनिक इतिहास	७७.००
प्राचीन भारत का धार्मिक सामाजिक और आर्थिक जीवन	७२.००
मध्य एशिया व चीन में भारतीय संस्कृति	५८.००
प्राचीन भारत	८०.००
भारतीय संस्कृति का विकास	७७.००
प्राचीन भारत की शासन संस्थाएँ और राजनीतिक विचार	५८.००
एशिया का आधुनिक इतिहास	१३०.००
यूरोप का इतिहास	१४०.००
समाजशास्त्र	८०.००
चाणक्य	६५.००
मौर्य साम्राज्य का इतिहास	१३५.००
भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन का इतिहास	५८.००
भारत का इतिहास	५५.००
विश्व की प्राचीन सभ्यताएँ	१७५.००
मध्यकालीन भारत	५८.००
प्राचीन भारत का सांस्कृतिक इतिहास	३२५.००
Political Thought of Swami Dayanand	150.00

डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

एकादशोपनिषद्	१२५.००
उपनिषद् प्रकाश	११०.००
श्रीमद्भगवद्गीता	१०५.००
संस्कार चन्द्रिका	१२०.००
बुढ़ापे से जवानी की ओर	९५.००
होमियोपैथिक चिकित्सा	१२५.००
होमियोपैथिक चित्रण	१२५.००
होमियोपैथी का क ख ग	१००.००
होमियोपैथी के मूल सिद्धान्त	८०.००
वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्व	४०.००
From old age to youth through Yoga	80.00
चतुर्वेद गंगालहरी	९५.००
मेरी नानी की कहानी	३५.००
माँ और बच्चा	२५.००

चमूपति एम.ए.

योगेश्वर कृष्ण	४०.००
वैदिक स्वर्ग	३०.००
वैदिक दर्शन	१५.००
अनादि तत्त्व	२५.००
विचार वाटिका (भाग दो)	१००.००

स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती

अग्निहोत्र सर्वस्व	१०.००
उपहार सर्वस्व	५.००
मृत्युञ्जय सर्वस्व	१०.००
स्वाध्याय सर्वस्व	१२.००
उपनयन सर्वस्व	१०.००
दो पुटन के बीच	८.००
ए लविंग टोकन	५.००

पं. शिवकुमार शास्त्री

श्रुति सौरभ	६०.००

स्वामी योगेश्वरानन्द

बहिरंग योग	७०.००
आत्मविज्ञान	८०.००
ब्रह्मविज्ञान	१००.००
दिव्य ज्योति विज्ञान	६०.००
प्राण विज्ञान	५०.००
दिव्य शब्द विज्ञान	६०.००
निर्गुण ब्रह्म	३०.००
व्याख्यानमाला (५ भाग)	१५०.००
हिमालय का योगी-I+II	१५५.००
First Step to Higher Yoga	70.00
Science of Soul	80.00
Science of Divinity	100.00
Science of Divine Light	65.00
Science of Vital Force	40.00
The Essential Colourlessness of the Absolute	40.00
Science of Divine Sound	40.00
Beads of Sermons	30.00
Himalaya Ka Yogi-I+II	160.00

डॉ. कपिल देव द्विवेदी

सुखी जीवन	१८.००
सुखी गृहस्थ	१२.५०
सुखी परिवार	१८.००
आचार शिक्षा	१०.००
नीति शिक्षा	१०.००
वेदों में नारी	२०.००
सुखी समाज	१८.००
वैदिक मनोविज्ञान	१८.००
यजुर्वेद सुभाषितावली	२५.००
सामवेद सुभाषितावली	२५.००
अथर्ववेद सुभाषितावली	३५.००
ऋग्वेद सुभाषितावली	४०.००
वेदों में आयुर्वेद	९०.००
Vedic Samdhya & Agnihotra	30.00
The Essence of The Vedas	200.00

महर्षि दयानन्द

सत्यार्थ प्रकाश	५०.००
संस्कार विधि	१०.००
ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका	४०.००
उपदेश मञ्जरी	१०.००
संस्कृत वाक्य प्रबोध	५.००
महर्षि दयानन्द (पं. लेखराम)	१००.००
महर्षि दयानन्द के सर्वश्रेष्ठ भाषण	५०.००

पं. भगवद्दत्त

सविता देवता	५८.००
बृहस्पति देवता	६५.००

पं. रामनाथ वेदालंकार

सामवेद (पूर्व. उत्तरार्ध)	४००.००
सामवेद (संस्कृत भाष्य) (दो भाग)	७००.००
आर्य ज्योति	५०.००
वेद मञ्जरी	५०.००
वैदिक नारी	४०.००

आचार्य अभयदेव वेदालंकार

वैदिक उपदेशमाला	१०.००
वैदिक विनय	१२५.००

स्वामी समर्पणानन्द

पञ्चयज्ञप्रकाश	१५.००
श्रीमद्भगवद्गीता	२०.००

पं. सुरेन्द्र कुमार

विशुद्ध मनुस्मृति	८०.००
मनुस्मृति	१५०.००

Svami Satya Prakash Sarasvati

Rigveda (13 vols)	2700.00
Athervaveda (4 vols)	1125.00
Samveda (2 vols)	1150.00
Yajurveda (1 vol)	500.00

स्वामी जगदीश्वरानन्द

देवर्षि दयानन्द चरित	२५.००
शुक्र नीतिसार	८०.००
सामवेद भाष्य	१००.००
बाल शिक्षा	५.००

स्वामी विद्यानन्द सरस्वती

भूमिका भास्कर (दो खण्ड)	३००.००
सत्यार्थ भास्कर (दो खण्ड)	७००.००
संस्कार भास्कर	१५०.००
तत्त्वमसि	४०.००
आर्यों का आदिदेश और उनकी सभ्यता	५०.००
रामायण : भ्रान्तियाँ और समाधान	६०.००
वेदार्थ भूमिका	२५.००
आर्य सिद्धान्त विमर्श	२५.००
गौ की गुहार	१५.००
Ishopanishad	45.00
Brahmasutra	150.00
The Riddle of Life & Death	20.00
Vedic Concept of God	50.00

मैक्समूलर

भारत की विश्व को देन	१३०.००

प्रो. रामविचार एम. ए.

वेद सन्देश (दो खण्ड)	१००.००

रमेश मुनि वानप्रस्थ

वैदिक यज्ञानुष्ठान विधिः	८०.००

डॉ. देवव्रत आचार्य

आसन प्राणायाम वैज्ञानिक विवेचन एवं चिकित्सा	४०.००

डॉ. विद्यासागर अबरोल

मोक्ष द्वार	२५.००

रामप्रकाश भसीन

मानव जीवन की सफलता के साधन	२०.००
सुख सागर	१५.००

वीर सावरकर साहित्य

१८५७ का भारतीय स्वातन्त्र्य समर	१३५.००
मेरा आजीवन कारावास	११०.००
काला पानी	६०.००
मोपला (उपन्यास) ऐतिहासिक	१६.००
गोमान्तक (उपन्यास) ऐतिहासिक	१६.००

पी. एन. ओक

वैदिक विश्व राष्ट्र का इतिहास—१	४५.००
वैदिक विश्व राष्ट्र का इतिहास—२	४५.००
वैदिक विश्व राष्ट्र का इतिहास—३	४५.००
वैदिक विश्व राष्ट्र का इतिहास—४	४५.००
आगरा का लालकिला हिन्दू भवन है	३५.००
दिल्ली का लालकिला लालकोट था	३०.००
ताजमहल मन्दिर भवन है	३५.००
भारतीय इतिहास की भयंकर भूलें	४५.००
कौन कहता है अकबर महान् था	५०.००
विश्व इतिहास के विलुप्त अध्याय	३०.००

स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती

आर्य समाज सिद्धान्त और प्रगति	४०.००
The Parables & Dailogues from the Upnishads	100.00

डॉ. भवानीलाल भारतीय

नवजागरण के पुरोधा : दयानन्द	६०.००
ऋषि दयानन्द के भक्त, प्रशंसक और सत्संगी	२०.००
मैंने ऋषि दयानन्द को देखा	१०.००
वैदिक मातृभूमि वंदना	२०.००
उपनिषद की कथाएँ	३५.००

डॉ. ओमप्रकाश वेदालंकार

मृत्यु से अमृत की ओर	१३.००
आर्यों का परम धर्म	७.००

ब्र. नन्दकिशोर

मातृ गौरव	५.००
सत्संग गौरव	९.००
पितृ गौरव	८.००

विजय बिहारीलाल माथुर

आर्य समाज के नियमों की व्याख्या (हिन्दी)	१५.००
आर्य समाज के नियमों की व्याख्या (अंग्रेजी)	१५.००

डी. ए. वी. प्रकाशन

महर्षि दयानन्द और उनके अनुवर्ती	५०.००
सूक्तियाँ (हिन्दी-संस्कृत-अंग्रेजी)	४०.००
प्रेरक प्रवचन (महात्मा हंसराज)	३५.००
क्रान्तिकारी भाई परमानन्द	५०.००
महात्मा हंसराज (आनन्द स्वामी)	४८.००
Swami Daynand	35.00
Story of My Life (Lajpat Rai)	50.00
Mahatma Hansraj (Eng.)	35.00
Rishi Dayanand Saraswati	30.00
Reminiscences and Reflections of a Vedic Scholar (Prof. Satyavrat)	60.00
The Arya Samaj (Lajpat Rai)	50.00
Wisdom of the Vedas	35.00
Swami Dayanand through Non Arya Samajist Eyes	75.00
Chips from a Vedic Workshop	80.00
The Original Philosphy of Yoga	100.00

आयुर्वेद-स्वास्थ

चरक संहिता (दो भाग)	४५०.००
सुश्रुत संहित	१९८.००
आयुर्वेद नवनीत	६५.००
आयुर्वेद चिकित्सा सार	३०.००
आयुर्वेद की पेटेन्ट दवाईयाँ	६०.००
आयुर्वेद के चमत्कार	५०.००
योग के अद्‌भुत चमत्कार	३०.००
भोजन द्वारा चिकित्सा	५५.००
क्या खाएँ और क्यों	४०.००
चिकित्सा आलोक	५०.००
आरोग्य दर्पण	२५.००

शिवनारायण उपाध्याय

वैदिक राजनीतिशास्त्र	७५.००
वेदों की वैज्ञानिक अवधारणा	१००.००
वेद और पर्यावरण	२५.००

सभा के प्रकाशन

ऋग्वेद भाष्यम (पाँच भाग)	६२५.००
अथर्ववेद भाष्यम (दो भाग)	२७५.००
सामवेद भाष्यम (एक भाग)	९०.००
यजुर्वेद भाष्यम (एक भाग)	१२५.००
वैदिक संपत्ति	१२५.००
कुलियात आर्य मुसाफिर	२००.००
मृत्यु और परलोक	१६.००
योग रहस्य	१४.००
पं. रामचन्द्र देहलवी लेखावली	१८.००
आर्य पर्व पद्धति	१६.००
आर्य सिद्धान्त सागर	१२५.००
वैदिक यज्ञ दर्शन	६०.००
संगीत रत्न प्रकाश	५०.००
कर्त्तव्य दर्पण	१०.००
विद्यार्थी जीवन रहस्य	५.००
आर्य समाज क्या है	५.००
कल्याण मार्ग का पथिक	१५.००
स्वामी दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द	१२.००
श्री मद्दयानन्द प्रकाश (स्वामी सत्यानन्द)	४०.००
संस्कार चन्द्रिका (भीम सेन शर्मा)	१२५.००
आत्म दर्शन	१०.००
आर्य समाज का इतिहास (दो खण्ड)	१२५.००
What is Arya Smaj?	30.00
Journey of the Soul	35.00
Science in the Vedas	25.00
Rigveda (5 Vols.)	420.00
Atharveda (2 Vols.)	130.00
Samveda	65.00
Yajurveda	125.00
Introduction of the Veda	30.00
Sanskar Vidhi	35.00
Nine Upnishads	20.00

पुस्तक-परिचय

बिखरे मोती—लेखक : डा० भवानीलाल भारतीय। मूल्य ४०.०० रु०

ऋषि दयानन्द तथा आर्यसमाज के अनेक महापुरुषों के जीवन में घटित उन रोचक किन्तु शिक्षाप्रद घटनाओं का संकलन है जो विभिन्न स्रोतों से एकत्र की गई हैं। स्वामी दर्शनानन्द, पं० गणपति शर्मा, पं० धर्मभिक्षु, पं० रामचन्द्र देहलवी तथा अमर स्वामी आदि शास्त्रार्थ महारथियों के ३१ रोचक प्रसंगों के अतिरिक्त आर्यों की हाजिर जवाबी, साहित्यकारों के बहुरंगी जीवन की झांकियां, उपदेशकों के चुटकुले, कविगुरु रवीन्द्रनाथ, स्वामी विवेकानन्द, पं० नेहरू, जार्ज बर्नार्ड शा आदि विश्व ख्याति के पुरुषों के मार्मिक संस्करणों का यह अनुपम संग्रह है।

दीप्ति—लेखक : स्वामी विद्यानन्द सरस्वती। मूल्य ८०.०० रु०

ग्रन्थ में स्वामी विद्यानन्द जी के सुविवेचित, शास्त्र प्रमाणों, युक्तियों एवं तर्क से समन्वित १६ ऐसे निबन्धों का संग्रह है जिनमें शरीर में जीवात्मा का आवास, स्थावर (वृक्षों) में जीव विचार, कालाकाल मृत्यु सृष्टि संवत् आदि उन विषयों का विचार है जो आर्य विद्वानों में भी विवाद के कारण बने हुए हैं। इन निबन्धों में भावुकता, अतिवादिता तथा अतिशयोक्ति को सर्वथा एक ओर रखकर स्वामी जी ने एक सतर्क समीक्षक की बेबाकी के साथ इन विवादों को सुलझाया है। स्वाध्यायशील आर्यों के लिए यह पुस्तक एक सुन्दर उपहार है।

वैदिक ज्ञानधारा—सं० : प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु। मूल्य ८०.०० रु०

आर्यसमाज के विगत काल के अनेक मनस्वी लेखकों, चिन्तकों तथा विचारकों के द्वारा रचित साहित्य से आज के आर्य पाठक प्रायः अपरिचित ही हैं। आवश्यकता इस बात की है कि ऐसे विशिष्ट निबन्ध साहित्य को पुनः उपलब्ध कराया जाए। प्रा० जिज्ञासु द्वारा सम्पादित यह ग्रन्थ इसी प्रयास की एक कड़ी है। पूरा ग्रन्थ आध्यात्म, सिद्धान्त तथा इतिहास शीर्षक तीन खण्डों में विभक्त है और कुल ३८ निबन्ध इसमें सम्मिलित किए गए हैं।

प्राप्ति-स्थान :—

विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द

४४०८, नई सड़क, दिल्ली-६

फोन : २९१४६४५

वैदिक राष्ट्रीय ऋचाएँ

लेखक : प्रो० कृष्णवल्लभ पालीवाल

वेद विश्व की प्राचीनतम पुस्तकें हैं एवं समस्त ज्ञान के भण्डार हैं। वेद मानव जीवन के प्रत्येक पहलू पर प्रकाश डालते हैं। मातृभूमि, स्वराज्य, राष्ट्र-निर्माण और राष्ट्ररक्षा जैसे विषयों पर वैदिक धारा अत्यन्त प्रगतिशील एवं व्यावहारिक है। वैदिक राष्ट्र-व्यवस्था पूर्णतया प्रजातान्त्रिक है और ग्राम-सभा से लेकर राज-सभा आदि विभिन्न समितियों द्वारा राज्य-व्यवस्था का मार्गदर्शन करती है।

वेदों का सन्देश है—समृद्ध, तेजस्वी, विस्तृत, समान आचार संहिता वाले राष्ट्र का निर्माण। वेदों में मातृभूमि, स्वराज्य, राज्य-व्यवस्था, राष्ट्र-निर्माण, राष्ट्र-संगठन, राष्ट्र-रक्षा, सैनिक शक्ति, युद्ध आदि विषयों पर अनेक मन्त्र हैं जो आज भी हमारे प्रेरणा स्रोत हैं।

यहाँ संक्षेप में बतौर नमूने, केवल एक सौ पचास मन्त्रों की वैदिक राष्ट्रवाद एवं राष्ट्रभक्ति की एकांकी प्रस्तुत की है।

मूल्य : १२.०० रु०

आर्य सूक्ति सुधा

लेखक : प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु

वैदिक धर्म व वैदिक दर्शन के मूलभूत सिद्धान्तों पर महर्षि दयानन्द व आर्य विचारकों की अकाट्य युक्तियों व मौलिक विचारों का संग्रह। हिन्दी, अंग्रेजी व उर्दू की सहस्रों पुस्तकों का निचोड़ इसमें आ गया है। आप किसी भी नये व्यक्ति को आस्तिक हो, नास्तिक हो, युवक हो या वृद्ध हो—यह पुस्तक भेंट कर सकते हैं। यदि आप दूसरों पर वैदिक धर्म की छाप लगाना चाहते हैं तो इसका व्यापक प्रचार करें। यह लघु ज्ञान-कोश है। इसे अपने परिवार में रखिए। सत्संग में कथा कीजिए। आर्य मनीषियों के अमृत-वचनों का यह सुमन-गुच्छ आपके मन को सुवासित करेगा।

मूल्य : १२.०० रु०

प्रकाशक-मुद्रक अजयकुमार ने सम्पादित कर अजय प्रिंटर्स, दिल्ली-३२ में मुद्रित करा वेदप्रकाश कार्यालय, ४४०८ नयी सड़क, दिल्ली से प्रसारित किया।